Hindi 'B'
बहुविकल्पीय प्रश्न

1. अपठित गद्यांश

निम्नलिखित गद्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए:

1. वर्षों की गुलामी ने हमारी शिक्षा-पद्धति को जो अवैज्ञानिक बना दिया है, विज्ञान संबंधी विषयों को एक प्रकार से बहिष्कृत कर दिया है, एक तो शिक्षा के क्षेत्र में उनकी पुनर्स्थापना होनी चाहिए, दूसरे जिस रूप में और जिस ढंग से शिक्षा दी जा रही है, वह भी बहुत कुछ अवैज्ञानिक हो चुका है, अत: उसे भी विज्ञान-सम्मत बनाया जाना चाहिए। ऐसा करके ही हम अपने देश में शिक्षा को समायानुकूल सार्थक और उपयोगी बना सकते हैं। आज शिक्षा को नए सांचे में ढालने का शोर चारों ओर सुनाई पड़ रहा है। उसमें वास्तविक नयापन वैज्ञानिक दृष्टि अपनाकर ही लाया जा सकता है, ऐसी हमारी दृढ़ धारणा है। शिक्षा में वैज्ञानिकता लाने का यह अर्थ भी नहीं है कि प्रत्येक विद्यार्थी को भौतिकी या रसायन शास्त्र पढ़ने के लिए बाध्य किया जाए। वास्तविक अर्थ यह है, हर विषय का पाठयक्रम ऐसा बनाया जाए कि वह व्यक्ति की समयानुकूल मानसिकता के विकास में सहायक हो सके। सोचने की बात है कि कहने को तो हम आज के युग को बड़े गर्व और गौरव के साथ वैज्ञानिक युग कहते हैं पर क्या जीवन के प्रति हमारा दृष्टिकोण व्यवहार के स्तर पर वैज्ञानिक हो पाया है? शायद नहीं! यदि हो पाया होता, तो आज जो अनेक प्रकार का आयाचित वातावरण बन रहा है, विघटनकारी प्रवृतियाँ एवं तत्व उभर रहे हैं, पारस्परिक अविश्वास और संदेह का वातावरण बन रहा है, वह सब कभी नहीं बन पाता। इस प्रकार की समस्त दूषित प्रवृतियों और मारक मानसिकताओं की हीनता से छुटकारा पाने के लिए ही आज शिक्षा के क्षेत्र में अधिकाधिक वैज्ञानिक दृष्टि अपनाए जाने की आवश्यकता है। वैज्ञानिक दृष्टि अपनाकर ही शिक्षा को उपयोगी एवं सार्थक बनाया जा सकता है। हर विषय जब एक स्पष्ट, सहज वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टि अपनाकर पढ़ाया जाएगा, तभी हमारी दृष्टि वस्तुत: सजग बन सकेगी। तभी हम वैज्ञानिक युग में रहने का सच्चा गर्व और गौरव प्राप्त कर सकेंगे।

(i) इस गद्यांश में शिक्षा को सार्थक और उपयुक्त बनाने के लिए कौन से दो सुझाव दिए गए हैं?

(क) प्रत्येक विद्यार्थी को भौतिकी या रसायन शास्त्र पढ़ने के लिए बाध्य करना और शिक्षा को नए सांचे में ढालने का शोर मचाना।

(ख) विघटनकारी प्रवृतियों एवं तत्वों को उभारना और पारस्परिक अविश्वास और संदेह का वातावरण बनाना।

(ग) गुलामी के कारण अवैज्ञानिक बना दी गयी शिक्षा पद्धति में विज्ञान सम्बन्धी विषयों की पुनर्स्थापना करना और शिक्षा प्रदान करने के रूप और ढंग को विज्ञान सम्मत बनाना।

(घ) मारक मानसिकता से छुटकारा पाना तथा समयानुकूल मानसिकता का विकास करना।

उत्तर: (ग) गुलामी के कारण अवैज्ञानिक बना दी गयी शिक्षा पद्धति में विज्ञान सम्बन्धी विषयों की पुनर्स्थापना करना और शिक्षा प्रदान करने के रूप और ढंग को विज्ञान सम्मत बनाना।

(ii) शिक्षा में किस तरह से नूतनता लाई जा सकती है?

(क) गुलामी करके।

(ख) शिक्षा के क्षेत्र में अवैज्ञानिक शिक्षा पद्धति की पुनर्स्थापना करके।

(ग) भौतिकी या रसायन शास्त्र पढ़ने के लिए बाध्य करके।

(घ) शिक्षा में वैज्ञानिक दृष्टि को अपना के।

उत्तर: (घ) शिक्षा में वैज्ञानिक दृष्टि को अपना के।

(iii) शिक्षा में वैज्ञानिकता लाने का क्या अर्थ बताया गया है?

(क) व्यक्ति की समयानुकूल मानसिकता का विकास होने में मदद हो ऐसी पाठ्यक्रम की रचना करना।

(ख) शिक्षा पद्धति को अधिकाधिक अवैज्ञानिक बनाना।

(ग) दूषित और विघटनकारी प्रवृत्तियों से छुटकारा पाना।

(घ) बड़े गर्व और गौरव के साथ वर्तमान युग को वैज्ञानिक युग सम्बोधित करना।

उत्तर: (क) व्यक्ति की समयानुकूल मानसिकता का विकास होने में मदद हो ऐसी पाठ्यक्रम की रचना बनाना।

(iv) जीवन के प्रति हमारा दृष्टिकोण, व्यवहार के स्तर पर वैज्ञानिक हो जाने से आज की स्थिति में कौन से बदलाव आने की सम्भावना जतायी गयी है?

(क) पारस्परिक अविश्वास और संदेह का वातावरण बना रहेगा।

(ख) विज्ञान संबंधी विषय को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जायेगा।

(ग) समाज में विघटनकारी दूषित प्रवृत्तियों के उभरने पर रोक लगेगी और मारक मानसिकता की हीनवृत्ति से छुटकारा पाया जायेगा।

(घ) हम वैज्ञानिक युग में रहने का सच्चा गर्व महसूस कर पाएंगे।

उत्तर: (ग) समाज में विघटनकारी दूषित प्रवृत्तियों के उभरने पर रोक लगेगी और मारक मानसिकता की हीनवृत्ति से छुटकारा पाया जायेगा।

(v) **प्रस्तुत गद्यांश में 'सजग' शब्द का विलोम शब्द क्या है?**

(क) सावधान (ख) लापरवाह

(ग) सजाना (घ) चौकन्ना

उत्तर: (ख) लापरवाह

2. सभी मनुष्यों के लिए जीवन में लक्ष्य का होना अनिवार्य है। लक्ष्यविहीन मनुष्य पशुओं के समान ही विचरण करता है। वह परिश्रम तो करता है परंतु उसका परिश्रम उसे किसी ऊँचाई की ओर नहीं ले जाता है क्योंकि उसका परिश्रम उद्देश्यरहित होता है। दूसरी ओर जीवन में एक निश्चित लक्ष्य रखने वाला मनुष्य अपनी समस्त ऊर्जा को लक्ष्य के प्रति आसानी से केंद्रित कर देता है जिससे वह दिन-प्रतिदिन प्रगति की ओर अग्रसर होता है। मनुष्य को अपने लक्ष्य का निर्धारण बहुत ही सावधानीपूर्वक करना चाहिए। लक्ष्य के निर्धारण में व्यक्ति की अपनी रूचि होना आवश्यक है। आधुनिक जगत की यही वि. डम्बना है कि अधिकांश लोग लक्ष्य का निर्धारण तो करते हैं परंतु उस कार्य में उनकी रूचि नहीं होती है। अधिकतर लोग ऐसे कार्य में व्यस्त हैं जिसके लिए वे पूर्ण रूप से योग्य नहीं होते हैं फिर भी संसाधनों आदि के अभाव में विवशतापूर्वक वे कार्य करते चले जाते हैं। नि:संदेह अनिच्छा से किए गए कार्य से वे अपनी शक्ति और सामर्थ्य का पूर्ण रूप से सदुपयोग नहीं कर पाते हैं जिससे जीवनपर्यंत वे सृजन से वंचित रह जाते हैं। अत: किसी भी कार्य को करने हेतु उस कार्य के प्रति मनुष्य की अभिरूचि नितांत आवश्यक है। हमारे देश में प्राय: लोग वंशानुगत कार्य को बड़ी ही सहजतापूर्वक अपना लेते हैं। बाल्यावस्था से ही मानसिक रूप से उन्हें इस प्रकार तैयार किया जाता है कि वह बड़े होकर स्वयं ही अपने पूर्वजों के बताए मार्ग पर चल पड़ते हैं। हालाँकि परंपरागत कार्यों को भी यदि आधुनिक वैज्ञानिक उपलब्धियों के साथ जोड़ दिया जाए तो उनमें नवीनता आ जाती है। कृषि कार्य हों या पशुपालन, आधुनिक तरीके अपनाकर लोग इन क्षेत्रों में भी नए आयाम स्थापित कर सकते हैं। विकसित देशों के लोग उन्नत कृषि विधियों को अपनाकर राष्ट्र के विकास में अतुलनीय योगदान करते हैं।

(i) **इस गद्यांश के अनुसार जीवन में लक्ष्य का महत्त्व है—**

(क) संसाधनों के अभाव में भी कार्य को जारी रख सकता है।

(ख) पूर्वजों के बताए मार्ग पर चल सकता है।

(ग) आधुनिक तरीके अपनाकर कृषि क्षेत्रों में भी नए आयाम स्थापित कर सकता है।

(घ) अपनी सारी ऊर्जा को लक्ष्य में आसानी से केंद्रित करके प्रतिदिन प्रगति की ओर बढ़ सकता है।

उत्तर: (घ) अपनी सारी ऊर्जा को लक्ष्य में आसानी से केंद्रित करके प्रतिदिन प्रगति की ओर बढ़ सकता है।

(ii) **किसी भी कार्य को करने हेतु उस कार्य के प्रति मनुष्य की अभिरूचि नितांत आवश्यक है क्योंकि—**

(क) सभी मनुष्य के लिए जीवन में लक्ष्य का होना अनिवार्य है।

(ख) मानसिक इच्छा और रूचि से किये गए कार्य में मनुष्य अपनी सारी शक्ति, ऊर्जा तथा सामर्थ्य का पूर्ण रूप से सदुपयोग कर पाता है जिससे उसका सम्पूर्ण जीवन सृजनशील बन जाता है।

(ग) मनुष्य का परिश्रम उद्देश्यरहित न हो।

(घ) परंपरागत कार्य आधुनिक उपलब्धियों के साथ जुड़ जाते हैं।

उत्तर: (ख) मानसिक इच्छा और रूचि से किये गए कार्य में मनुष्य अपनी सारी शक्ति, ऊर्जा तथा सामर्थ्य का पूर्ण रूप से सदुपयोग कर पाता है जिससे उसका सम्पूर्ण जीवन सृजनशील बन जाता है।

(iii) **कार्यों में नवीनता किस प्रकार आ सकती है?**

(क) जब लक्ष्य का निर्धारण बहुत ही सावधानीपूर्वक हो।

(ख) जब परंपरागत कार्यों को भी आधुनिक वैज्ञानिक उपलब्धियों के साथ जोड़ दिया जाए।

(ग) जब लोग वंशानुगत कार्य को बड़ी ही सहजतापूर्वक अपना लेते हैं।

(घ) जब अधिकांश लोग लक्ष्य का निर्धारण तो करते हैं परंतु उस कार्य में उनकी रूचि नहीं होती है।

उत्तर: (ख) जब परंपरागत कार्यों को भी आधुनिक वैज्ञानिक उपलब्धियों के साथ जोड़ दिया जाए।

(iv) **लक्ष्यविहीन मनुष्य और पशुओं में क्या समानता बतायी गयी है?**

(क) लक्ष्यविहीन मनुष्य पशुओं के समान परिश्रम करता है।

(ख) लक्ष्यविहीन मनुष्य पशुओं के समान अपनी समस्त ऊर्जा को लक्ष्य के प्रति आसानी से केंद्रित कर देता है।

(ग) लक्ष्यविहीन मनुष्य पशुओं के समान कार्य में रूचि नहीं रखता है।

(घ) लक्ष्यविहीन मनुष्य पशुओं के समान विचरण करता है जिनकी अरूचि भरी मेहनत उन्हें जीवन में ऊँचाई की ओर नहीं ले जा सकती।

उत्तर: (घ) लक्ष्यविहीन मनुष्य पशुओं के समान विचरण करता है जिनकी अरूचि भरी मेहनत उन्हें जीवन में ऊँचाई की ओर नहीं ले जा सकती।

(v) **प्रस्तुत गद्यांश में प्रयुक्त 'लक्ष्य', 'विडम्बना', 'अभिरुचि' इन शब्दों के लिए आए हुए क्रमशः विलोम शब्दः**

(क) उद्देश्य, उपहास, चाहत।

(ख) दिलचस्पी, उपहास, मकसद।

(ग) चाहत, उपहास, प्रयोजन।

(घ) व्यंगोक्ति, पसंद, हेतु।

उत्तर: (क) उद्देश्य, उपहास, चाहत।

3. आज बढ़ती महँगाई, बेरोजगारी, फैशन की होड़ ने समाज के काफी लोगों को कुण्ठा से भर दिया है। 'वो हमारे पास नहीं, जो पड़ोसी के पास है' इस सोच ने लोगों में मन की शान्ति छीन ली है; जिसके कारण लोग बेईमानी से धन कमाने की ओर उन्मुख हो रहे हैं। बेईमानी की यह प्रवृत्ति अन्य अपराध को जन्म देती है। युवा वर्ग अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए महिलाओं से चेन स्नेचिंग, बलात्कार, चोरी, हत्या, डकैती की राह बढ़ता चला जा रहा है। आतंकवादी बनने, उग्रवाद के रास्ते पर चलने की प्रवृत्ति भी हताशा और लालसा का परिणाम है। यह रास्ता समाज और देश के भविष्य के लिए नितांत घातक है। अपराधयुक्त समाज में प्रयासरत लोगों द्वारा अपराध पर नियन्त्रण करने की बात तो समय-समय पर की जाती है लेकिन अपराधमुक्ति की सम्भावनाएँ कम ही रहती है। देश को अपराधमुक्त करने के लिए हमारी शासन व्यवस्था को सख्ती से कार्य करना होगा और आपराधिक प्रवृत्तियों वाले इन्सानों को कठोर दण्ड देना होगा जिससे

उनमें भय उत्पन्न हो। जिससे यह सोच बने कि यदि हम अपराध करेंगे और भविष्य में पकडे गए तो हमारे साथ भी शासन द्वारा सख्ती से बर्ताव किया जायेगा। इस प्रकार हमारी शासन व्यवस्था को आपराधिक प्रवृत्ति वाले इन्सानों में खौफ का वातावरण बनाना होगा तभी जाकर देश में अपराध कम होगा और जनता सुख-चैन की नींद ले सकेगी। यदि समाज अपराधमुक्त होगा तो देश की कानून व्यवस्था और आर्थिक दशा सुदृढ़ होगी और समाज प्रगतिशील होगा। राष्ट्र को विकसित एवं अपराधमुक्त करने के लिए ऐसी कानून व्यवस्था की आवश्यकता है जिससे देश एवं समाज अपराध से भयमुक्त हो सके। किसी भी देश की अव्यवस्थित कानून व्यवस्था चुस्त-दुरूस्त रखने की जिम्मेदारी जिला प्रशासन की होती है। कानून व्यवस्था के अतिरिक्त अल्प जनचेतना व सजगता देश को भी अपराधमुक्त करने में बाधा उत्पन्न करती है। वर्तमान समय में राजनीति व अपराध में जबरदस्त सामंजस्य स्थापित हुआ है। अपराधी धीरे-धीरे राजनीति में आ रहे हैं तथा महत्वपूर्ण पद संभाल रहे हैं। इस प्रकार आज देश की शासन व्यवस्था आपराधिक लोगों के हाथ में जा रही है। वर्तमान समय में देश में भ्रष्टाचार तीव्र गति से बढ़ रहा है। कोर्ट-कचहरी हो या हाकिम की चौखट, सभी जगह भ्रष्टाचार का बोलबाला है। सच्चे अर्थों में भ्रष्टाचार भी अपराध के लिए एक मुख्य कारण बन गया है।

(i) मनुष्य की अशांति का कारण है—

(क) आज की बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी, फैशन की होड़।
(ख) ढीली शासनव्यवस्था।
(ग) विकृत राजनीति।
(घ) मनुष्य की तुलनात्मक सोच-दूसरों के पास या पड़ोसियों के पास होने वाली भौतिक उपलब्धियाँ अपने पास नहीं है।

उत्तर: (घ) मनुष्य की तुलनात्मक सोच-दूसरों के पास या पड़ोसियों के पास होने वाली भौतिक उपलब्धियाँ अपने पास नहीं है।

(ii) बेईमानी और लालसा समाज में जन्म देती है—

(क) आपराधिक प्रवृत्ति को।
(ख) बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी, फैशन की होड को।
(ग) खौफ के वातावरण को।
(घ) मन की अशान्ति को।

उत्तर: (क) आपराधिक प्रवृत्ति को।

(iii) देश को अपराधमुक्त करने के लिए करना चाहिए—

(क) बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी, फैशन की होड पर नियन्त्रण करना।
(ख) शासन व्यवस्था को सख्त बनाकर आपराधिक प्रवृत्तियों वाले इंसानों को तथा गुनहगारों को कठोर दंड देना।
(ग) देश की आर्थिक दशा सुदृढ़ करना।
(घ) कानून व्यवस्था अव्यवस्थित रखना।

उत्तर: (ख) शासन व्यवस्था को सख्त बनाकर आपराधिक प्रवृत्तियों वाले इंसानों को तथा गुनहगारों को कठोर दंड देना।

(iv) गद्यांश में प्रयुक्त 'भ्रष्टाचार' पद का समास भेद तथा विग्रह होगा—

(क) भ्रष्ट और आचार — द्वन्द्व समास।
(ख) भ्रष्ट-आचार — अव्ययीभाव समास।
(ग) भ्रष्ट है जो आचार — कर्मधारय।
(घ) आचार में भ्रष्ट — तत्पुरुष।

उत्तर: (ग) भ्रष्ट है जो आचार — कर्मधारय।

(v) कानून व्यवस्था को चुस्तदुरूस्त रखने की जिम्मेदारी इसकी होती है—

(क) सजग जनता। (ख) प्रगतिशील समाज।
(ग) जिला प्रशासन। (घ) राजकीय पक्ष।

उत्तर: (ग) जिला प्रशासन।

4. सामाजिक प्रभाव और दवाब की उपेक्षा कर साहित्यकार एक कदम भी आगे नहीं चल सकता और यदि चलता भी है तो आवश्यक नहीं कि साहित्य पर समाज का यह प्रभाव सदैव अनुकूल हो, वह प्रतिकूल भी हो सकता है। कबीर की साखियों तथा प्रेमचंद के कथा साहित्य के अध्ययन से यही बात स्पष्ट होती है। कबीर ने अपने समय के धार्मिक आडंबरों, सामाजिक कुप्रवृत्ति, रूढ़ियों एवं खोखली मान्यताओं के विरोध में अपना स्वर बुलंद किया। निराला के साहित्य में ही नहीं उनके व्यक्तिगत जीवन में भी संघर्ष बराबर बना रहा। प्रेमचंद की कहानियों और उपन्यासों में सर्वत्र किसी न किसी सामाजिक समस्या के प्रति उनकी गहरी संवेदना दिखाई देती है, परन्तु साहित्यकार अपने युग तथा समाज के प्रभाव से अपने को अलग रखना भी चाहे तो कदापि नहीं रख सकता।

साहित्य समाज का दर्पण होता है, किन्तु इस कथन का यह आशय नहीं है कि साहित्यकार समाज का फोटोग्राफर है और सामाजिक विद्रूपताओं, कमियों, दोषों, अंधविश्वासों और मान्यताओं का यथार्थ चित्रण करना उसका उद्देश्य होता है। साहित्यकार का दायित्व वस्तुस्थिति का यथातथ्य चित्रण मात्र प्रस्तुत कर देना ही नहीं वरन् उनके कारणों का विवेचन करते हुए श्रेयस मार्ग की ओर तक ले जाना है। साहित्य युग और समाज का होकर भी युगांतकारी जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा कर सुंदरतम समाज का जो भी रूप हो सकता है, उसका भी एक रेखाचित्र प्रस्तुत करता है। उसमें रंग भरकर जीवंतता प्रदान कर देना पाठकों एवं सामाजिकों का कार्य होता है। इस प्रकार जीवन के शाश्वत मूल्यों की प्रतिष्ठा करने के कारण साहित्यकार एक देशीय होकर भी सार्वदेशिक होता है।

(i) प्रेमचंदजी के साहित्य का ढांचा इस प्रकार का है—

(क) सामाजिक समस्या के प्रभाव से प्रेरित।
(ख) युगांतकारी जीवन मूल्यों से प्रेरित।
(ग) सार्वदेशिकता से सम्मिलित।
(घ) पाठकों को रुझाने वाला।

उत्तर: (क) सामाजिक समस्या के प्रभाव से प्रेरित।

(ii) कबीर दास जी ने अपने साहित्य में किसके लिए अपना स्वरस्तर उच्चतम किया है?

(क) सामाजिक प्रभाव और दवाब के लिए।
(ख) अपने समय के धार्मिक आडंबरों, सामाजिक कुप्रवृत्तियों, रूढ़ियों एवं खोखली मान्यताओं के विरोध में।
(ग) युगांतकारी जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए।
(घ) एक देशीय साहित्यकार होने के लिए।

उत्तर: (ख) अपने समय के धार्मिक आडंबरों, सामाजिक कुप्रवृत्तियों, रूढ़ियों एवं खोखली मान्यताओं के विरोध में।

(iii) साहित्य समाज का दर्पण होता है इस कथन का आशय यह नहीं होना चाहिए—

(क) कि वो समाज के सिर्फ, नकारात्मक अंगों का यानी सामाजिक विद्रूपताओं, कमियों, दोषों, अंधविश्वासों और मान्यताओं का आईना अपने साहित्य में दिखा दे।

(ख) कि वो समाज के नकारात्मक अंगों का यानी सामाजिक विद्रूपताओं, कमियों, दोषों, अंधविश्वासों और मान्यताओं का आईना अपने साहित्य में ना दिखाये।

(ग) कि वह सिर्फ सर्वदेशीय साहित्यकार बने।

(घ) कि सामाजिक समस्या के प्रति उनकी गहरी संवेदना हो।

उत्तर: (क) कि वो समाज के सिर्फ, नकारात्मक अंगों का यानी सामाजिक विद्रूपताओं, कमियों, दोषों, अंधविश्वासों और मान्यताओं का आईना अपने साहित्य में दिखा दे।

(iv) साहित्य का दायित्व क्या होना चाहिए?

(क) सामाजिक प्रभाव और दवाब की उपेक्षा करके आगे चलता रहे।

(ख) अपने युग तथा समाज के प्रभाव से अपने को अलग रखें।

(ग) सामाजिक विद्रूपताओं, कमियों, दोषों, अंधविश्वासों और मान्यताओं का यथार्थ चित्रण न करना।

(घ) साहित्य में वस्तुस्थिति का यथातथ्य चित्रण करने के अतिरिक्त उनके कारणों का विवेचन करते हुए श्रेयस की ओर मार्गस्थल होना, युगांतकारी शाश्वत जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा कर सुंदरतम समाज के रूप का रेखाचित्र प्रस्तुत करना।

उत्तर: (घ) साहित्य में वस्तुस्थिति का यथातथ्य चित्रण करने के अतिरिक्त उनके कारणों का विवेचन करते हुए श्रेयस की ओर मार्गस्थल होना, युगांतकारी शाश्वत जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा कर सुंदरतम समाज के रूप का रेखाचित्र प्रस्तुत करना।

(v) गद्यांश में प्रयुक्त 'प्रतिकूल' समस्त पद का समासभेद तथा विग्रह होगा—

(क) प्रति और कुल — द्वन्द्व समास।

(ख) प्रति + कूल (इच्छा के विरुद्ध)—अव्ययीभाव समास।

(ग) प्रति है जो कुल — कर्मधारय।

(घ) कुल में विरुद्ध — तत्पुरुष।

उत्तर: (ख) प्रति + कूल (इच्छा के विरुद्ध)—अव्ययीभाव समास।

5. भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतान्त्रिक देश है। लोकतंत्र का तात्पर्य है, जनता का शासन। लोक यानी जनता और तंत्र का अर्थ है शासन। ब्रिटिश शासनकाल के पश्चात जब देश को आजादी प्राप्त हुई, तब भारत को लोकतान्त्रिक देश घोषित किया गया था। लोकतन्त्र एक ऐसी शासन प्रणाली है जिसमें प्रत्येक 18 साल से ऊपर के आदमी को वोट देने का अधिकार है। सभी लोग समान रूप से मतदान कर सकते हैं। लोकतंत्र का अधिकार सबसे महत्त्वपूर्ण है। देश के सभी लोग सोच विचार करके अपने अनुसार मतदान देते हैं, जिसके आधार पर सरकार का गठन होता है। समस्त संसार में हमारा देश भारत सबसे बड़ा लोकतान्त्रिक देश है जिससे उसे प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है। इस देश में सभी लोगों के धर्म को मान्यता दी गयी है। धर्म, वर्ण, जाति, रंग, भाषा के आधार पर किसी से भेदभाव नहीं किया जाता है। अगर ऐसा कोई भी करता है, तो यह अपराध है। संविधान के अनुसार सभी लोग एक समान है।

भारत में संविधान सन् 1950 में लागू किया गया था। इस लोकतान्त्रिक देश में न्याय, मित्रता, आज़ादी और लोगों में समानता जैसे मूल्यों को महत्व दिया गया। देश की केंद्र सरकार नियम और कानूनों का निर्माण करती है। संसद, केंद्र सरकार का दायित्व होती है। देश में लोकसभा का चुनाव केंद्र सरकार के लिए किया जाता है। संविधान द्वारा दी गयी सभी ताकतों का उपयोग केंद्र सरकार भली-भाँति करती है। देश में कुल मिलाकर 29 राज्य और 7 केंद्रशासित प्रदेश है। सभी राज्यों का शासन राज्यपाल और मुख्यमंत्री द्वारा किया जाता है। देश के हर राज्य का नेतृत्व मुख्यमंत्री करते हैं। राज्य अथवा प्रदेश की बागडोर उनके फैसले पर निर्भर करती है। मुख्यमंत्री का कार्य बहुत महत्वपूर्ण होता है। वह राज्य की सुरक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य इत्यादि सभी क्षेत्रों की उन्नति में मुख्य भूमिका निभाते हैं। मंत्रिपरिषद के प्रमुख मुख्यमंत्री होते हैं।

(i) लोकतंत्र का अर्थ है—

(क) देश में तंत्र-मंत्र को बढ़ावा देना।

(ख) जनता का शासन।

(ग) किसी अन्य देश का शासन।

(घ) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर: (ख) जनता का शासन।

(ii) लोकतंत्र में कितनी आयु का व्यक्ति मतदान कर सकता है—

(क) 21 वर्ष का। (ख) 18 वर्ष का।

(ग) 16 वर्ष का। (घ) 24 वर्ष का।

उत्तर: (ख) 18 वर्ष का।

(iii) भारत में संविधान कब लागू किया गया?

(क) 1947 में। (ख) 1857 में।

(ग) 1950 में। (घ) 1919 में।

उत्तर: (ग) 1950 में।

(iv) भारतीय संविधान के अनुसार क्या अपराध है—

(क) मतदान करना।

(ख) सबको समान समझना।

(ग) लोकतंत्र लागू करना।

(घ) धर्म, वर्ण, जाति, रंग के आधार पर भेदभाव करना।

उत्तर: (घ) धर्म, वर्ण, जाति, रंग के आधार पर भेदभाव करना।

(v) मुख्यमंत्री के उत्तरदायित्व हैं—

(क) राज्य के लिए सुरक्षा नीति बनाना।

(ख) शिक्षा व्यवस्था की उन्नति कराना।

(ग) अच्छी स्वास्थ्य सुविधाएँ प्रदान करना।

(घ) ये सभी।

उत्तर: (घ) ये सभी।

6. वैदिक युग भारत का प्राय: सबसे अधिक स्वाभाविक काल था। यही कारण है कि आज तक भारत का मन उस काल की ओर बार-बार लोभ से देखता है। वैदिक आर्य अपने युग को स्वर्णकाल कहते थे या नहीं, यह हम नहीं जानते किंतु उनका समय हमें स्वर्णकाल के समान अवश्य दिखाई देता है। लेकिन जब बौद्ध युग का आरंभ हुआ, वैदिक समाज की पोल खुलने लगी और चिंतकों के बीच उसकी आलोचना आरंभ हो गई। बौद्ध युग अनेक दृष्टियों से आज के आधुनिक आंदोलन के समान था। ब्राह्मणों की श्रेष्ठता के विरुद्ध बुद्ध ने विद्रोह का प्रचार किया था, बुद्ध जाति प्रथा के विरोधी थे और वे मनुष्य को जन्मना नहीं कर्मणा श्रेष्ठ या अधम मानते थे। नारियों को भिक्षुणी होने का अधिकार देकर उन्होंने यह बताया था कि मोक्ष केवल पुरुषों के ही निमित्त नहीं है, उसकी अधिकारिणी नारियाँ भी हो सकती हैं। बुद्ध की ये सारी बातें भारत को याद रही हैं और बुद्ध के समय से बराबर इस देश में ऐसे लोग उत्पन्न होते रहे हैं, जो जाति-प्रथा के विरोधी थे, जो मनुष्य को जन्मना नहीं, कर्मणा श्रेष्ठ या अधम समझते थे। किंतु बुद्ध में आधुनिकता से बेमेल बात यह थी कि वे निवृत्तिवादी थे, गृहस्थी के कर्म से वे भिक्षु-धर्म को श्रेष्ठ समझते थे।

(i) बौद्ध युग के आरम्भ से क्या परिवर्तन आए?

(क) नारियों का भिक्षुणी अधिकार लुप्त हुआ।

(ख) ब्राह्मणों की श्रेष्ठता बरकरार रही।

(ग) वैदिक समाज की पोल खुलने लगी और चिंतकों के बीच उसकी टीका टिप्पणी हुई।

(घ) मनुष्य को जन्म से श्रेष्ठ माना गया।

उत्तर: (ग) वैदिक समाज की पोल खुलने लगी और चिंतकों के बीच उसकी टीका टिप्पणी हुई।

(ii) नारियों के बारे में बुद्ध के विचार स्पष्ट कीजिए—

(क) मोक्ष नारियों का अधिकार नहीं है बल्कि पुरुष भी उसके समान अधिकारपात्र है यह बताते हुए बुद्ध ने नारियों को भिक्षुणी होने का अधिकार नहीं दिया।

(ख) मोक्ष सिर्फ पुरुषों का अधिकार नहीं है बल्कि नारियाँ (स्त्रियाँ) उसकी समान अधिकारपात्र है यह बताते हुए बुद्ध ने नारियों को भिक्षुणी होने का अधिकार दिया।

(ग) नारियों की आलोचना करना समाज का हक है ऐसे मानना।

(घ) नारियों को अधम मानना।

उत्तर: (ख) मोक्ष सिर्फ पुरुषों का अधिकार नहीं है बल्कि नारियाँ (स्त्रियाँ) उसकी समान अधिकारपात्र है यह बताते हुए बुद्ध ने नारियों को भिक्षुणी होने का अधिकार दिया।

(iii) जातिप्रथा के बारे में बुद्ध के विचार थे—

(क) ब्राह्मण जाति की श्रेष्ठता बरकरार मानना।

(ख) जातिप्रथा का विरोध, निवृत्तवादी, मनुष्य को गृहस्थी के कर्म से नहीं बल्कि जन्म से श्रेष्ठ या कनिष्ठ मानना।

(ग) जातिप्रथा का विरोध, निवृत्तवादी, मनुष्य को गृहस्थी के जन्म से नहीं बल्कि कर्म से श्रेष्ठ या कनिष्ठ मानना।

(घ) भिक्षु धर्म को अधम मानना।

उत्तर: (ग) जातिप्रथा का विरोध, निवृत्तवादी, मनुष्य को गृहस्थी के जन्म से नहीं बल्कि कर्म से श्रेष्ठ या कनिष्ठ मानना।

(iv) भारत का वैदिक युग स्वर्णकाल के समान प्रतीत होता है क्योंकि—

(क) वैदिक आर्य अपने युग को स्वर्णकाल कहते थे।

(ख) वैदिक युग भारत का प्रायः सबसे अधिक स्वाभाविक काल था।

(ग) वैदिक समाज की पोल खुलने लगी थी और चिंतकों के बीच उसकी आलोचना आरंभ हो गई थी।

(घ) भारत का मन उस काल की ओर बार-बार लोभ से देखता है।

उत्तर: (ख) वैदिक युग भारत का प्रायः सबसे अधिक स्वाभाविक काल था।

(v) प्रस्तुत गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक—

(क) वैदिक स्वर्णकाल।

(ख) मनुष्य कर्म।

(ग) निवृत्तवाद।

(घ) बौद्ध वैचारिकता से समाज में बदलाव।

उत्तर: (घ) बौद्ध वैचारिकता से समाज में बदलाव।

7. सुचारित्र्य के दो सशक्त स्तंभ हैं—प्रथम सुसंस्कार और द्वितीय सत्संगति। सुसंस्कार पूर्व जीवन की सत्संगति व सत्कर्मों की अर्जित सम्पत्ति है और सत्संगति वर्तमान जीवन की दुर्लभ विभूति है। जिस प्रकार कुधातु की कठोरता और कालिख पारस के स्पर्श मात्र से कोमलता और कमनीयता में बदल जाती है, ठीक उसी प्रकार कुमार्गी का कालुष्य सत्संगति से स्वर्णिम आभा में परिवर्तित हो जाता है। सतत सत्संगति से विचारों को नई दिशा मिलती है और अच्छे विचार मनुष्य को अच्छे कार्यों में प्रेरित करते हैं। परिणामतः सुचरित्र का निर्माण होता है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने लिखा है—महाकवि टैगोर के पास बैठने मात्र से ऐसा प्रतीत होता था, मानो भीतर का देवता जाग गया हो। वस्तुत, चरित्र से ही जीवन की सार्थकता है। चरित्रवान व्यक्ति समाज की शोभा है, शक्ति है। सुचारित्र्य से व्यक्ति ही नहीं, समाज भी सुवासित होता है और इस सुवास से राष्ट्र यशस्वी बनता है। विदुर जी की उक्ति अक्षरशः सत्य है कि सुचरित्र के बीज हमें भले ही वंश परंपरा से प्राप्त हो सकते हैं, पर चरित्र-निर्माण व्यक्ति के अपने बलबूते पर निर्भर है। आनुवंशिक परंपरा, परिवेश और परिस्थिति उसे केवल प्रेरणा दे सकते हैं, पर उसका अर्जन नहीं कर सकते, वह व्यक्ति को उत्तराधिकार में प्राप्त नहीं होता। व्यक्ति-विशेष के शिथिल-चरित्र होने से पूरे राष्ट्र पर चरित्र-संकट उपस्थित हो जाता है, क्योंकि व्यक्ति पूरे राष्ट्र का एक घटक है। अनेक व्यक्तियों से मिलकर एक परिवार, अनेक परिवारों से एक कुल, अनेक कुलों से एक जाति या समाज और अनेकानेक जातियों और समाज समुदायों से मिलकर ही एक राष्ट्र बनता है।

(i) इस गद्यांश में सत्संगति और सुसंस्कार के बारे में क्या विचार प्रतिपादित किया है?

(क) सत्संगति और सुस्कार से जीवन सार्थक होता है।

(ख) सत्संगति और सुसंस्कार समाज के सशक्त स्तम्भ है।

(ग) सुसंस्कार पूर्व जीवन की सत्संगति व सत्कर्मों की संचित संपत्ति है और सत्संगति वर्तमान जीवन की अनूठी दौलत है।

(घ) सत्संगति और सुसंस्कार वंश परंपरा से प्राप्त हो सकते हैं।

उत्तर: (ग) सुसंस्कार पूर्व जीवन की सत्संगति व सत्कर्मों की संचित संपत्ति है और सत्संगति वर्तमान जीवन की अनूठी दौलत है।

(ii) व्यक्ति के चरित्र-निर्माण में किस-किस का योगदान होता है?

(क) आनुवंशिक परंपरा, परिवेश और परिस्थिति।

(ख) सुसंस्कार, सत्संगति, परिवार, कुल, जाति, समाज।

(ग) वंश परंपरा, व्यक्ति विशेष और सत्कर्म।

(घ) स्वयं के सामर्थ्य का।

उत्तर: (घ) स्वयं के सामर्थ्य का।

(iii) पूरे राष्ट्र पर चरित्र-संकट कब उपस्थित हो जाता है?

(क) व्यक्ति-विशेष के दुर्बल-चरित्र होने से।

(ख) व्यक्ति को उत्तराधिकार प्राप्त न होने पर।

(ग) व्यक्ति के कुसंगति में आने पर।

(घ) व्यक्ति राष्ट्र का एक घटक न होने पर।

उत्तर: (ग) व्यक्ति के कुसंगति में आने पर।

(iv) व्यक्ति को सुचरित्र के बीज यहाँ से प्राप्त होते हैं—

(क) राष्ट्र से। (ख) परिस्थिति से।

(ग) वंश परंपरा से। (घ) समाज से।

उत्तर: (ग) वंश परंपरा से।

(v) गद्यांश में प्रयुक्त 'सत्संगति' में कौन-सा समास है—

(क) कर्मधारय—पूर्वपद विशेषण और उत्तरपद विशेष्य।

(ख) द्विगु—पूर्व पद प्रधान होता है तथा संख्यावाची।

(ग) तत्पुरुष—पूर्वपद गौण तथा उत्तरपद प्रधान, विच्छेद करने पर कारक चिन्ह का प्रयोग।

(घ) द्वंद्व— दोनों पद प्रधान तथा विच्छेद करने पर 'और' का प्रयोग।

उत्तर: (क) कर्मधारय—पूर्वपद विशेषण और उत्तरपद विशेष्य।

8. जहाँ भी दो नदियाँ आकर मिल जाती हैं, उस स्थान को अपने देश में तीर्थ कहने का रिवाज है और यह केवल रिवाज की ही बात नहीं है, हम सचमुच मानते हैं कि अलग-अलग नदियों में स्नान करने से जितना पुण्य होता है, उससे कहीं अधिक पुण्य संगम स्नान में है। किंतु, भ. रत आज जिस दौर से गुजर रहा है, उसमें असली संगम वे स्थान, वे सभाएँ तथा वे मंच हैं, जिन पर एक से अधिक भाषाएँ एकत्र होती हैं। नदियों की विशेषता यह है कि वे अपनी धाराओं में अनेक जनपदों का सौरभ, अनेक जनपदों के आँसू और उल्लास लिए चलती हैं और उनका पारस्परिक मिलन में वास्तव में नाना प्रकार के आँसू और उमंग, भाव और विचार, आशाएँ और शंकाएँ समाहित होती हैं। अत: जहाँ भाषाओं का मिलना होता है, यहाँ वास्तव में विभिन्न जनपदों के हृदय ही मिलते हैं, उनके भावों और विचारों का ही मिलन होता है तथा भिन्नताओं में छिपी हुई एकता वहाँ कुछ अधिक प्रत्यक्ष हो उठती है। इस दृष्टि से भाषाओं के संगम आज सबसे बड़े तीर्थ हैं और इन तीर्थों में जो भी भारतवासी श्रद्धा से स्नान करता है, वह भारतीय एकता का सबसे बड़ा सिपाही और संत है। हमारी भाषाएँ जितनी ही तेजी से जगेंगी, हमारे विभिन्न प्रदेशों का पारस्परिक ज्ञान उतना ही बढ़ता जाएगा। भारतीय को चाहिए कि वे केवल अपनी ही भाषा में प्रसिद्ध होकर न रह जाएँ, बल्कि भारत की अन्य भाषाओं में भी उनके नाम पहुँचें और उनकी कृतियों की चर्चा हो। भाषाओं के जागरण का आरंभ होते ही एक प्रकार का अखिल भारतीय मंच आप-से-आप प्रकट होने लगा है। आज प्रत्येक भाषा के भीतर यह जानने की इच्छा उत्पन्न हो गई है कि भारत की अन्य भाषाओं में क्या हो रहा है, उनमें कौन-कौन ऐसे लेखक है तथा कौन सी विचारधारा वहाँ प्रभुसत्ता प्राप्त कर रही है।

(i) इस गद्यांश में नदियों की क्या विशेषता लेखक ने बताई है?

(क) नदी में स्नान करने से पुण्य प्राप्त होता है।

(ख) नदियों का संगम पुण्य संगम होता है।

(ग) दो नदियों के मिलन के स्थान को तीर्थस्थल कहा जाता है।

(घ) नदियाँ अनेक प्रदेशों से बहते हुए अपने साथ विविध जनसमूहों के जीवन के सुगंध, उनके हर्षानंद और आसुओं को तथा उनके भाव-विचार, आशाएँ, समस्याएँ अपने में समाहित करते हुए बहती हैं।

उत्तर: (घ) नदियाँ अनेक प्रदेशों से बहते हुए अपने साथ विविध जनसमूहों के जीवन के सुगंध, उनके हर्षानंद और आसुओं को तथा उनके भाव-विचार, आशाएँ, समस्याएँ अपने में समाहित करते हुए बहती हैं।

(ii) दो नदियों के संगम स्थल को कहा जाता है—

(क) पुण्यस्थल। (ख) तीर्थस्थान।

(ग) जनपद का सौरभ। (घ) पुण्यस्नान।

उत्तर: (ख) तीर्थस्थान।

(iii) भाषाओं के संगम के बारे में लेखक के क्या विचार हैं?

(क) भाषाओं के संगम से अखिल भारतीय मंच आप-से-आप प्रकट होने लगा है।

(ख) भाषाओं के संगम से यह जानने की इच्छा उत्पन्न हो गई है कि भारत की अन्य भाषाओं में क्या हो रहा है।

(ग) भाषाओं के संगम में कौन-सी विचारधारा प्रभुसत्ता प्राप्त कर रही है।

(घ) भाषाओं के संगम में गोता लगाने वाले श्रद्धालु भारतवासियों को सबसे बड़ा सिपाही और संत कहा है क्योंकि वे भारत की एकता का स्त्रोत होते हैं।

उत्तर: (घ) भाषाओं के संगम में गोता लगाने वाले श्रद्धालु भारतवासियों को सबसे बड़ा सिपाही और संत कहा है क्योंकि वे भारत की एकता का स्त्रोत होते हैं।

(iv) अलग-अलग प्रदेशों में आपसी ज्ञान किस प्रकार बढ़ सकता है?

(क) जब भाषाओं के जागरण का आरम्भ होगा।

(ख) जब पारस्परिक मिलन में वास्तव में नाना प्रकार के आँसू और उमंग, भाव और विचार, आशाएँ और शंकाएँ समाहित होंगी।

(ग) जब भारतीय भाषाएँ तेजी से जगेंगी।

(घ) जब दो नदियों के पवित्र संगम पर पुण्यस्नान होगा।

उत्तर: (ख) जब पारस्परिक मिलन में वास्तव में नाना प्रकार के आँसू और उमंग, भाव और विचार, आशाएँ और शंकाएँ समाहित होंगी।

(v) 'भारतवासी' समस्तपद का समास विग्रह होगा—

(क) भारत रूपी वासी— कर्मधारय।

(ख) भारत के वासी — तत्पुरुष।

(ग) भारत है वासी जिसका — कर्मधारय।

(घ) भारत और वासी — द्वंद्व।

उत्तर: (ख) भारत के वासी — तत्पुरुष।

9. विद्वानों का यह कथन बहुत ठीक है कि विनम्रता के बिना स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं। इस बात को सब लोग मानते हैं कि आत्मसंस्कार के लिए थोड़ी-बहुत मानसिक स्वतंत्रता परमावश्यक है—चाहे उस स्वतंत्रता में अभिमान और नम्रता दोनों का मेल हो और चाहे वह नम्रता ही से उत्पन्न हो। यह बात तो निश्चित है कि जो मनुष्य मर्यादापूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहता है, उसके लिए वह गुण अनिवार्य है, जिससे आत्मनिर्भरता आती है और जिससे अपने पैरों के बल खड़ा होना आता है। युवा को यह सदा स्मरण रखना चाहिए कि वह बहुत कम बातें जानता है, अपने ही आदर्श से वह बहुत नीचे है और उसकी आकांक्षाएँ उसकी योग्यता से कहीं बढ़ी हुई हैं। उसे इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह अपने बड़ों का सम्मान करे, छोटों और बराबर वालों से कोमलता का व्यवहार करे, ये बातें आत्ममर्यादा के लिए आवश्यक हैं। यह सारा संसार, जो कुछ हम हैं और जो कुछ हमारा है—हमारा शरीर, हमारी आत्मा, हमारे भोग, हमारे घर और बाहर की दशा, हमारे बहुत से अवगुण और थोड़े गुण सब इसी बात की आवश्यकता प्रकट करते है कि हमें अपनी आत्मा को नम्र रखना चाहिए। नम्रता से मेरा अभिप्राय दब्बूपन से नहीं है, जिसके कारण मनुष्य दूसरों का मुँह ताकता है, जिससे उसका संकल्प क्षीण और उसकी प्रज्ञा मंद हो जाती है, जिसके कारण वह आगे बढ़ने के समय भी पीछे रहता है और अवसर पड़ने पर झटपट किसी बात का निर्णय नहीं कर सकता। मनुष्य का बेड़ा उसके अपने ही हाथ में है, उसे वह चाहे जिधर ले जाए। सच्ची आत्मा वही है, जो प्रत्येक स्थिति के बीच अपनी राह अपने आप निकालती है।

(i) **आत्मसंस्कार के लिए किन गुणों का होना आवश्यक है—**

(क) मानसिक स्वतंत्रता (ख) मर्यादा

(ग) अभिमान और विनम्रता (घ) दब्बूपन

उत्तर: (ग) अभिमान और विनम्रता

(ii) **मर्यादापूर्ण जीवन से मनुष्य को क्या लाभ होता है?**

(क) छोटों और बराबर वालों से कोमलता का व्यवहार करने की समझ।

(ख) संकल्प क्षीण होना और उसकी प्रज्ञा मंद होना।

(ग) अवसर पड़ने पर झटपट किसी बात का निर्णय नहीं कर पाना।

(घ) मनुष्य में आत्मनिर्भरता आकर उसका खुद के सामर्थ्य पर खड़ा होना।

उत्तर: (घ) मनुष्य में आत्मनिर्भरता आकर उसका खुद के सामर्थ्य पर खड़ा होना

(iii) **आत्ममर्यादा के लिए युवाओं में कौनसी बातें होना लाजमी है—**

(क) अवसर पड़ने पर झटपट किसी बात का निर्णय कर पाना।

(ख) आत्मनिर्भर बनकर खुद के बलबूते पर खड़े रहना।

(ग) अपने बड़ों का सम्मान करना, छोटों और बराबर वालों से कोमलता का व्यवहार करना।

(घ) अपने ही आदर्श से वह बहुत ऊँचा है ये जानना।

उत्तर: (ग) अपने बड़ों का सम्मान करना, छोटों और बराबर वालों से कोमलता का व्यवहार करना।

(iv) **इस गद्यांश के अनुसार 'सच्ची आत्मा' वह होती है—**

(क) जो कितनी भी दुर्लभ स्थिति में अपनी राह खुद निकालकर आती है।

(ख) जो खुद को विनम्र रख पाए।

(ग) जो मर्यादापूर्ण हो।

(घ) जो आत्मनिर्भर हो।

उत्तर: (क) जो कितनी भी दुर्लभ स्थिति में अपनी राह खुद निकालकर आती है।

(v) **प्रस्तुत गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक—**

(क) 'सच्ची आत्मा'।

(ख) विनम्रता की शक्ति।

(ग) आत्मनिर्भरता की पूंजी।

(घ) मर्यादा का महत्व।

उत्तर: (ख) विनम्रता की शक्ति।

10. तत्ववेत्ता शिक्षाविदों के अनुसार विद्या दो प्रकार की होती है—प्रथम वह, जो हमें जीवनयापन के लिए अर्जन करना सिखाती है और द्वितीय वह, जो हमें जीना सिखाती है। इनमें से एक का भी अभाव जीवन को निरर्थक बना देता है। बिना कमाए जीवन-निर्वाह संभव नहीं। कोई भी नहीं चाहेगा कि वह परावलंबी हो—माता-पिता, परिवार के किसी सदस्य, जाति या समाज पर। विद्या से विहीन व्यक्ति का जीवन दूभर हो जाता है, वह दूसरों के लिए भार बन जाता है। साथ ही विद्या के बिना सार्थक जीवन नहीं जिया जा सकता। बहुत अर्जित कर लेने वाले व्यक्ति का जीवन यदि सुचारु रूप से नहीं चल रहा, उसमें यदि वह जीवन-शक्ति नहीं है, जो उसके अपने जीवन को तो सत्यपथ पर अग्रसर करती ही है, साथ ही वह अपने समाज, जाति एवं राष्ट्र के लिए भी मार्गदर्शन करती है, तो उसका जीवन भी मानव जीवन का अभिधान नहीं पा सकता। वह भारवाही गर्दभ बन जाता है या पूँछ-सींगविहीन पशु कहा जाता है। वर्तमान भारत में दूसरी विद्या का प्राय अभाव दिखाई देता है, परंतु पहली विद्या का रूप भी विकृत ही है, क्योंकि न तो स्कूल कॉलेजों से शिक्षा प्राप्त करके निकला छात्र जीविकोपार्जन के योग्य बन पाता है और न ही वह उन संस्कारों से युक्त हो पाता है, जिनसे व्यक्ति कु से सु बनता है, सुशिक्षित, सुसभ्य और सुसंस्कृत कहलाने का अधिकारी होता है। वर्तमान शिक्षा-पद्धति के अंतर्गत हम जो विद्या प्राप्त कर रहे हैं, उसकी विशेषताओं को सर्वथा नकारा भी नहीं जा सकता। यह शिक्षा कुछ सीमा तक हमारे दृष्टिकोण को विकसित भी करती है, हमारी मनीषा को प्रबुद्ध बनाती है तथा भावनाओं को चेतन करती है, किंतु कला, शिल्प, प्रौद्योगिकी आदि की शिक्षा नाममात्र की होने के फलस्वरूप इस देश के स्नातक के लिए जीविकोपार्जन टेढ़ी खीर बन जाता है और बृहस्पति बना युवक नौकरी की तलाश में अर्जियाँ लिखने में ही अपने जीवन का बहुमूल्य समय बर्बाद कर लेता है। जीवन के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए यदि शिक्षा के क्रमिक सोपानों पर विचार किया जाए, तो भारतीय विद्यार्थी को सर्वप्रथम इस प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए, जो आवश्यक हो, दूसरी जो उपयोगी हो और तीसरी जो हमारे जीवन को परिष्कृत एवं अलंकृत करती हो। यह तो भवन की छत बनाकर नींव बनाने के सदृश है। वर्तमान भारत में शिक्षा की अवस्था देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीन भारतीय दार्शनिकों ने अन्न से आनंद की ओर बढ़ने को जो विद्या का सार कहा था, वह सर्वथा समीचीन ही था।

(i) **वर्तमान शिक्षा पद्धति से होनेवाली हानि—**

(क) हमारी मनीषा प्रबुद्ध नहीं बनती

(ख) भावनाएँ सचेतन नहीं होती

(ग) जीवन सुचारु रूप से नहीं चलता

(घ) नौकरियाँ ढूँढ़ने में जीवन व्यतीत हो जाता है और स्नातकों के लिए जीविकोपार्जन एक कठिन समस्या बन जाती है।

उत्तर: (घ) नौकरियाँ ढूँढ़ने में जीवन व्यतीत हो जाता है और स्नातकों के लिए जीविकोपार्जन एक कठिन समस्या बन जाती है।

(ii) **शिक्षाशास्त्रियों के अनुसार शिक्षा के कौनसे प्रकार होते हैं?**

(क) व्यक्ति के जीवन को दूभर और असार्थक करने वाली शिक्षा।

(ख) जीवन में मार्गदर्शन करने वाली तथा अभिधान पाने वाली शिक्षा।

(ग) शिक्षा जो जीवननिर्वाह के लिए कमाना यानी अर्जन करना सिखाती है और द्वितीय प्रकार की शिक्षा वो होती है जो हमें साक्षात् जीना सिखाती है, जीवन अनुभव सम्पन्न बनाती है।

(घ) हमारा दृष्टिकोण प्रबुद्ध करने वाली और भावनाओं को अचेतन करने वाली शिक्षा।

उत्तर: (ग) शिक्षा जो जीवननिर्वाह के लिए कमाना यानी अर्जन करना सिखाती है और द्वितीय प्रकार की शिक्षा वो होती है जो हमें साक्षात् जीना सिखाती है, जीवन अनुभव सम्पन्न बनाती है।

(iii) **विद्याहीन व्यक्ति की समाज में क्या स्थिति होती है?**

(क) विद्याहीन व्यक्ति सुचारु रूप से नहीं चल सकता।

(ख) विद्याहीन व्यक्ति का जीवन निरर्थक तथा परावलम्बी हो जाता है।

(ग) विद्याहीन व्यक्ति में जीवन शक्ति नहीं रह जाती।

(घ) विद्याहीन व्यक्ति का जीवन मानव जीवन का अभिधान नहीं पा सकता।

उत्तर: (ख) विद्याहीन व्यक्ति का जीवन निरर्थक तथा परावलम्बी हो जाता है।

(iv) **शिक्षा की कौनसी क्रमिक सीढ़ियाँ विद्यार्थी जीवन का सर्वांगीण विकास करने में सहायक होती हैं?**

(क) आवश्यक, उपयुक्त, अलंकृत एवं उन्नत।
(ख) परिष्कृत, उपयुक्त, आवश्यक तथा अलंकृत।
(ग) उपयुक्त, अलंकृत एवं परिष्कृत, आवश्यक।
(घ) अलंकृत एवं परिष्कृत, आवश्यक, उपयुक्त।

उत्तर: (क) आवश्यक, उपयुक्त, अलंकृत एवं उन्नत।

(v) **प्रस्तुत गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक—**

(क) विद्याहीन व्यक्ति की अवहेलना।
(ख) भारत की शिक्षा पद्धति।
(ग) विद्या का महत्त्व।
(घ) सार्थक शिक्षा का महत्त्व।

उत्तर: (घ) सार्थक शिक्षा का महत्त्व।

2. व्याकरण

(I) पदबंध

रेखांकित के लिए उचित पदबंध चुनिये—

1. मेरा जी पढ़ने में बिल्कुल नहीं लगता था—

(क) क्रिया पदबंध (ख) क्रिया विशेषण पदबंध
(ग) सर्वनाम पदबंध (घ) संज्ञा पदबंध

उत्तर: (क) क्रिया पदबंध

2. तुम्हारी बुद्धि का कसूर है।

(क) संज्ञा पदबंध (ख) अव्यय पदबंध
(ग) विशेषण पदबंध (घ) सर्वनाम पदबंध

उत्तर: (क) संज्ञा पदबंध

3. मैदान की वह सुखद हरियाली अनिवार्य रूप में मुझे खींच ले जाती।

(क) संज्ञा पदबंध (ख) विशेषण पदबंध
(ग) सर्वनाम पदबंध (घ) क्रिया विशेषण पदबंध

उत्तर: (ख) विशेषण पदबंध

4. संसार के अनेक राष्ट्र अंग्रेजों का आधिपत्य स्वीकार नहीं करते।

(क) अव्यय पदबंध (ख) विशेषण पदबंध
(ग) सर्वनाम पदबंध (घ) क्रिया पदबंध

उत्तर: (घ) क्रिया पदबंध

5. फिर सालाना इम्तिहान हुआ और कुछ ऐसा संयोग हुआ कि मैं फिर पास हुआ।

(क) संज्ञा पदबंध (ख) सर्वनाम पदबंध
(ग) क्रिया पदबंध (घ) विशेषण पदबंध

उत्तर: (ग) क्रिया पदबंध

6. साल के किसी महीने में शायद ही कोई शुक्रवार ऐसा जाता हो जब कोई न कोई हिंदी फिल्म पर्दे पर न पहुँचती हो।

(क) सर्वनाम पदबंध (ख) विशेषण पदबंध
(ग) संज्ञा पदबंध (घ) क्रिया विशेषण पदबंध

उत्तर: (क) सर्वनाम पदबंध

7. शैलेंद्र ने उत्साहपूर्वक काम करना स्वीकार कर लिया।

(क) क्रिया विशेषण पदबंध (ख) संज्ञा पदबंध
(ग) सर्वनाम पदबंध (घ) विशेषण पदबंध

उत्तर: (घ) विशेषण पदबंध

8. 'तीसरी कसम' को राष्ट्रपति स्वर्णपदक मिला।

(क) विशेषण पदबंध (ख) संज्ञा पदबंध
(ग) सर्वनाम पदबंध (घ) क्रिया पदबंध

उत्तर: (ख) संज्ञा पदबंध

9. दोनों रोज उसी जगह पहुँचते।

(क) विशेषण पदबंध (ख) सर्वनाम पदबंध
(ग) क्रिया विशेषण पदबंध (घ) क्रिया पदबंध

उत्तर: (क) विशेषण पदबंध

10. उसे ज्ञात ही नहीं हो सका कि कोई अजनबी युवक उसे निःशब्द ताके जा रहा है

(क) विशेषण पदबंध (ख) क्रिया पदबंध
(ग) क्रिया विशेषण पदबंध (घ) संज्ञा पदबंध

उत्तर: (ग) क्रिया विशेषण पदबंध

11. इसके बाद निकोबार द्वीप समूह की शृंखला आरंभ होती है।

(क) सर्वनाम पदबंध (ख) अव्ययीभाव पदबंध
(ग) संज्ञा पदबंध (घ) विशेषण पदबंध

उत्तर: (क) सर्वनाम पदबंध

12. अंदमान और कार-निकोबार आपस में जुड़े हुए थे।

(क) संज्ञा पदबंध (ख) अव्ययीभाव पदबंध
(ग) विशेषण पदबंध (घ) सर्वनाम पदबंध

उत्तर: (ख) अव्ययीभाव पदबंध

13. भारत सरकार ने इन्हें पद्मभूषण सम्मान से अलंकृत किया।

(क) संज्ञा पदबंध (ख) अव्ययीभाव पदबंध
(ग) क्रिया पदबंध (घ) क्रिया विशेषण पदबंध

उत्तर: (ग) क्रिया पदबंध

14. वह धीरे-धीरे प्रसिद्ध हो गया।

(क) विशेषण पदबंध (ख) क्रिया विशेषण पदबंध
(ग) संज्ञा पदबंध (घ) क्रिया पदबंध

उत्तर: (ख) क्रिया विशेषण पदबंध

15. पहले पद में मीरा ने हरि से अपनी पीड़ा व्यक्त की है।

(क) विशेषण पदबंध (ख) अव्ययीभाव पदबंध
(ग) संज्ञा पदबंध (घ) क्रिया पदबंध

उत्तर: (ग) संज्ञा पदबंध

(II) रचना के आधार पर वाक्य रूपांतरण

1. 'जैसे ही बिजली चमकी लोग घबरा गए।'—वाक्य का संयुक्त रूप है—

(क) बिजली चमकते ही लोग घबरा गए।
(ख) बिजली चमकी और लोग घबरा गए।
(ग) लोग घबरा गए जब बिजली चमकी।
(घ) बिजली चमकी कि लोग घबरा गए।

उत्तर: (ख) बिजली चमकी और लोग घबरा गए।

2. 'जब से धरती पर पाप बढ़ गए है तब से अजीबोगरीब संकट आ रहे हैं।' —वाक्य संबंधित है।

(क) संयुक्त वाक्य से (ख) मिश्र वाक्य से
(ग) सरल वाक्य से (घ) प्रश्न वाक्य से

उत्तर: (ख) मिश्र वाक्य से

3. 'उपद्रवी लोगों से सभी दूर रहना चाहते हैं।'—वाक्य का मिश्र रूपांतरण होगा।

(क) कुछ उपद्रवी लोग होते हैं और सभी उनसे दूर रहना चाहते हैं।
(ख) कुछ लोगों से सभी दूर रहना चाहते हैं क्योंकि वे उपद्रवी होते हैं।
(ग) जो उपद्रवी लोग होते हैं सभी उनसे दूर रहना चाहते हैं।
(घ) सभी उपद्रवी लोगों से दूर रहना चाहते हैं।

उत्तर: (ग) जो उपद्रवी लोग होते हैं सभी उनसे दूर रहना चाहते हैं।

4. 'जब जब नैसर्गिक आपदाएँ आती हैं, तब-तब महँगाई बढ़ जाती है।'—वाक्य का सरल रूप निम्न विकल्पों में से चुनें।

(क) जैसे ही नैसर्गिक आपदाएँ आती हैं, वैसे ही महँगाई बढ़ती है।
(ख) महँगाई जब-जब बढ़ती है तब-तब नैसर्गिक आपदाएँ आती हैं।
(ग) नैसर्गिक आपदाएँ आने पर महँगाई बढ़ जाती है।
(घ) नैसर्गिक आपदाएँ आती हैं और महँगाई बढ़ती है।

उत्तर: (ग) नैसर्गिक आपदाएँ आने पर महँगाई बढ़ जाती है।

5. 'कोयल ने कुहु पुकारा और वर्षा का आगमन हुआ।' वाक्य संबंधित है—

(क) मिश्र वाक्य (ख) संयुक्त वाक्य
(ग) सरल वाक्य (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर: (ख) संयुक्त वाक्य

6. 'परीक्षाएँ खत्म हुईं और विद्यार्थी छुट्टियाँ मनाने गए।' वाक्य का मिश्र रूप है—

(क) क्योंकि परीक्षाएँ खत्म हुईं थी इसलिए विद्यार्थी छुट्टियाँ मनाने गए।
(ख) परीक्षाएँ खत्म हुईं नहीं कि विद्यार्थी छुट्टियाँ मनाने गए।
(ग) परीक्षाएँ खत्म होते ही विद्यार्थी छुट्टियाँ मनाने गए।
(घ) जैसे ही परीक्षाएँ खत्म हुईं, वैसे ही विद्यार्थी छुट्टियाँ मनाने गए।

उत्तर: (घ) जैसे ही परीक्षाएँ खत्म हुईं, वैसे ही विद्यार्थी छुट्टियाँ मनाने गए।

7. 'यदि कोरोना नहीं होता तो कई जानें बचतीं।' वाक्य का संयुक्त वाक्य रूपांतर होगा—

(क) क्योंकि कोरोना आया इसलिए कई जानें नहीं बची।
(ख) कोरोना आया तो कई जानें नहीं बची।
(ग) कोरोना आया और कई जानें नहीं बचीं।
(घ) कोरोना नहीं आया तो कई जानें बचेंगी।

उत्तर: (ग) कोरोना आया और कई जानें नहीं बचीं।

8. 'मैं एक व्यक्ति को जानता हूँ जो तुम्हारी मदद कर सकेगा' वाक्य का सरल रूप है—

(क) तुम्हारी मदद कर सके ऐसे एक व्यक्ति को मैं जानता हूँ।
(ख) तुम्हारी मदद कर सकने वाले एक व्यक्ति को मैं जानता हूँ।
(ग) मैं एक व्यक्ति को जानता हूँ और वो तुम्हारी मदद करेगा।
(घ) तुम्हारी मदद करेगा जो व्यक्ति उसे मैं जानता हूँ।

उत्तर: (ख) तुम्हारी मदद कर सकने वाले एक व्यक्ति को मैं जानता हूँ।

9. 'वह किताबें लेकर कॉलेज चला गया।' वाक्य का मिश्र रूप होगा—

(क) उसने किताबें ले लीं और वह कॉलेज चला गया।
(ख) कॉलेज में जाने से पहले उसने किताबें ले लीं।
(ग) उसने जैसे ही किताबें ले लीं, वह कॉलेज चला गया।
(घ) जब उसने किताबें ले लीं तब वह कॉलेज चला गया।

उत्तर: (ग) उसने जैसे ही किताबें ले लीं, वह कॉलेज चला गया।

10. 'गरीब होने पर भी वह उदार है।' वाक्य का संयुक्त रूप है—

(क) गरीब होते हुए भी वह उदार है।
(ख) वह गरीब है और उदार है।
(ग) वह गरीब है किंतु उदार है।
(घ) वह गरीब है या उदार है।

उत्तर: (ग) वह गरीब है किंतु उदार है।

11. 'वह बीमार था, इसलिए कार्यालय नहीं जा पाया।'— इस वाक्य का क्या भेद है?

(क) संयुक्त वाक्य (ख) सरल वाक्य
(ग) मिश्र वाक्य (घ) प्रश्न वाक्य

उत्तर: (क) संयुक्त वाक्य

12. 'नौकरी मिल जाने पर भी वह पढ़ता रहता है।' वाक्य का मिश्र वाक्य में रूप होगा—

(क) यद्यपि उसे नौकरी मिल गयी है लेकिन वह पढ़ता रहता है।
(ख) नौकरी मिल जाने के बावजूद भी वह पढ़ता रहता है।
(ग) नौकरी मिल गयी और वो पढ़ता रहता है।
(घ) उसने नौकरी मिल जाने पर भी पढ़ाई जारी रखी।

उत्तर: (क) यद्यपि उसे नौकरी मिल गयी है लेकिन वह पढ़ता रहता है।

13. 'जो मेरी बहन है, उसने लाल सारी पहनी है।' वाक्य का संयुक्त रूप है—

(क) लाल सारी पहनी हुई लड़की मेरी बहन है।
(ख) वह मेरी बहन है और उसने लाल सारी पहनी है।

(ग) मेरी बहन ने लाल सारी पहनी है।
(घ) अगर लाल सारी पहनती है तो वो मेरी बहन है।

उत्तर: (ख) वह मेरी बहन है और उसने लाल सारी पहनी है।

14. 'राधा ने वक्त पर दवाईयाँ लीं और वह ठीक हो गयी।' वाक्य संबंधित है—

(क) संयुक्त वाक्य से (ख) सरल वाक्य से
(ग) मिश्र वाक्य से (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर: (क) संयुक्त वाक्य से

15. 'सूरज ढलने पर अंधकार छा गया।' इस वाक्य का मिश्र वाक्य रूपांतरण होगा—

(क) सूरज ढलते ही अंधकार हुआ।
(ख) सूरज ढला और अंधकार हुआ।
(ग) क्या सूरज ढलते ही अंधकार हुआ?
(घ) जब सूरज ढला तब अंधकार छा गया।

उत्तर: (घ) जब सूरज ढला तब अंधकार छा गया।

(III) समास

1. 'गजानन' समस्त पद में कौनसा समास है?

(क) तत्पुरुष (ख) कर्मधारय
(ग) द्वंद्व (घ) बहुव्रीही

उत्तर: (घ) बहुव्रीही

2. 'नवरात्र' समस्त पद में कौन-सा समास है?

(क) द्विगु (ख) द्वंद्व
(ग) कर्मधारय (घ) बहुव्रीही

उत्तर: (क) द्विगु

3. विशेषण और विशेष्य के संयोग से कौनसा समास बनता है?

(क) कर्मधारय (ख) बहुव्रीही
(ग) तत्पुरुष (घ) द्वंद्व

उत्तर: (क) कर्मधारय

4. 'गगनचुंबी' समस्त पद का उचित विग्रह है—

(क) गगन के लिए चूमना। (ख) गगन को चूमने वाला।
(ग) गगन को चूमना। (घ) गगन से चूमना।

उत्तर: (ख) गगन को चूमने वाला।

5. 'चक्रपाणी' में कौनसा समास है?

(क) अव्ययीभाव (ख) तत्पुरुष
(ग) कर्मधारय (घ) बहुव्रीही

उत्तर: (घ) बहुव्रीही

6. जिस समास में उत्तरखंड (उत्तरपद) प्रधान हो, और दोनों पदों के बीच कारक का लोप हो वह समास क्या कहलाता है?

(क) अव्ययीभाव (ख) तत्पुरुष
(ग) बहुव्रीही (घ) द्वंद्व

उत्तर: (ख) तत्पुरुष

7. कन्यादान में कौन-सा समास है?

(क) तत्पुरुष (ख) कर्मधारय
(ग) द्वंद्व (घ) अव्ययीभाव

उत्तर: (क) तत्पुरुष

8. 'ईश्वर से विमुख' का समस्तपद—

(क) ईश्वर मुख (ख) ईश्वर सुमुख
(ग) ईश्वर का मुख (घ) ईश्वर विमुख

उत्तर: (घ) ईश्वर विमुख

9. जिस समास में दोनों खंड प्रधान हो वह समास क्या कहलाता है?

(क) बहुव्रीही (ख) तत्पुरुष
(ग) द्वंद्व (घ) अव्ययीभाव

उत्तर: (ग) द्वंद्व

10. किस समस्त पद में तत्पुरुष समास है?

(क) अन्नपूर्ण (ख) चराचर
(ग) त्रिमुख (घ) वनवास

उत्तर: (घ) वनवास

11. प्रधानमंत्री में कौनसा समास है?

(क) कर्मधारय (ख) अव्ययीभाव
(ग) तत्पुरुष (घ) द्वंद्व

उत्तर: (क) कर्मधारय

12. वह यथाशक्ति दान करता है—इस वाक्य में 'यथाशक्ति' समस्त पद में कौन-सा समास है?

(क) अव्ययीभाव (ख) द्विगु
(ग) कर्मधारय (घ) द्वंद्व

उत्तर: (क) अव्ययीभाव

13. देवासुर में कौनसा समास है?

(क) कर्मधारय (ख) बहुव्रीही
(ग) द्वंद्व (घ) तत्पुरुष

उत्तर: (ग) द्वंद्व

14. कौनसा समस्त पद बहुव्रीही समास का उदाहरण है?

(क) त्रिलोक (ख) नीलकंठ
(ग) रातोरात (घ) माता-पिता

उत्तर: (ख) नीलकंठ

15. 'आजीवन' समस्त पद का सही समास विग्रह कीजिए।

(क) जीवन से—तत्पुरुष
(ख) जीवन भर / जीवन पर्यंत— अव्ययीभाव
(ग) अच्छे जीवन जैसा — कर्मधारय
(घ) आज और वन — द्वंद्व

उत्तर: (ख) जीवन भर / जीवनपर्यंत— अव्ययीभाव

(IV) मुहावरे

1. 'बाट जोहना' इस मुहावरे का सही प्रयोग निम्नलिखित वाक्यों में से किसमें है?

(क) दीदी ने गुस्से में बाट जोह दी।
(ख) रूपा ने मना करने पर भी आस मन में रखकर, करुणा उसकी बाट जोहती रही।
(ग) बाट जोहना न जाने आँगन टेढ़ा।
(घ) मुझे गणित का गृहकार्य बाट जोहने जैसा प्रतीत होता है।

उत्तर: (ख) रूपा ने मना करने पर भी आस मन में रखकर, करुणा उसकी बाट जोहती रही।

2. 'सुध-बुध खोना' मुहावरे का सही अर्थ क्या है?

(क) अपने वश में न रहना। (ख) हक्का-बक्का रहना।
(ग) आश्चर्यचकित होना। (घ) बिखर जाना।

उत्तर: (क) अपने वश में न रहना।

3. 'भ्रम या भुलावे में पड़ना' इस अर्थ का कौन सा सही मुहावरा है?

(क) जमीन पर पाँव न रखना। (ख) राह न सूझना।
(ग) प्राण रखना। (घ) चक्कर खाना।

उत्तर: (घ) चक्कर खाना।

4. 'राह न सूझना' का सही अर्थ क्या है?

(क) पता न चलना। (ख) उपाय न मिलना।
(ग) घबरा जाना। (घ) परेशान होना।

उत्तर: (ख) उपाय न मिलना।

5. 'स्थायी रूप से रहना' इस अर्थ का सही मुहावरा चुनिए।

(क) बेघर करना। (ख) बस जाना।
(ग) डेरा डालना। (घ) हावी होना।

उत्तर: (ग) डेरा डालना।

6. 'आग-बबूला होना।' इस अर्थ का कौन सा सही वाक्य नीचे दिया गया है?

(क) परीक्षा में प्रथम दर्जा प्राप्त करने पर आशू के पिताजी आग बबूला हो गए।
(ख) पहली बार गगनचुंबी इमारत देखकर गाँव की रामी आग-बबूला हो गयी।
(ग) विनोदी और मनोरंजन भरी फिल्म देखते देखते अर्ची और रेशमा हँसते हँसते आग-बबूला हो रहे थे।
(घ) दूसरी बार भी रंजू के कक्षा में अनुत्तीर्ण होने पर रंजू के पिताजी आग-बबूला हो गए।

उत्तर: (घ) दूसरी बार भी रंजू के कक्षा में अनुत्तीर्ण होने पर रंजू के पिताजी आग-बबूला हो गए।

7. 'आटे-दाल का भाव मालूम होना' का सही अर्थ चुनिए।

(क) महँगाई का अनुभव होना।
(ख) कठिनाई का अनुभव होना।
(ग) व्यवहार में निपुण होना।
(घ) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर: (ख) कठिनाई का अनुभव होना।

8. 'दाँतों पसीना आना' मुहावरे का सही अर्थ चुनिए।

(क) बहुत अधिक परेशानी उठाना।
(ख) शरीर का अंग दुखना।
(ग) घबरा जाना।
(घ) खुश होना।

उत्तर: (क) बहुत अधिक परेशानी उठाना।

9. 'सुराग न मिलना' मुहावरे का सही प्रयोग किस वाक्य में किया गया है?

(क) अचानक धन लाभ होने पर रेशम के लिए मानो सुराग ही मिल गया है।
(ख) पहाड़ में रास्ता निकालने के लिए कोशिशों के बाद भी खुदाई की टीम को सुराग नहीं मिल रहा था।
(ग) अथक मेहनत के बाद भी परीक्षा में मनचाहे सुराग न मिलने पर गायत्री बहुत दुखी हुई।
(घ) शातिर अपराधी के खोज में पुलिस को कोई भी सुराग नहीं मिला।

उत्तर: (घ) शातिर अपराधी के खोज में पुलिस को कोई भी सुराग नहीं मिला।

10. 'हाथ-पाँव फूल जाना' मुहावरे का सही अर्थ क्या है?

(क) परेशानी देखकर घबरा जाना।
(ख) ढीला पड़ना।
(ग) शरीर में सूजन आना।
(घ) बहुत क्रोध होना।

उत्तर: (क) परेशानी देखकर घबरा जाना।

11. 'तलवार खींचना' मुहावरे का सही अर्थ क्या है?

(क) खेल खेलना, खेलकूद में शामिल होना।
(ख) तलवार को जोर से खींचना
(ग) लड़ाई के लिए तैयार रहना।
(घ) युद्धभूमि पर विजय प्राप्त करना।

उत्तर: (ग) लड़ाई के लिए तैयार रहना।

12. 'चूल्लू भर पानी देने वाला' इस मुहावरे का सही अर्थ कौनसे वाक्य में दिया गया है?

(क) अगर तुम किसी की सहायता नहीं करोगे तो तुम्हारी परेशानी के वक्त तुम्हें भी कोई चुल्लू भर पानी देने वाला नहीं मिलेगा।
(ख) वह प्यास से तड़प रही थी, पर उसे किसी ने चुल्लू भर पानी तक नहीं दिया।
(ग) पानी की बचत करनी चाहिए वरना खत्म होने पर चुल्लू भर पानी तक नहीं मिलेगा।
(घ) जिसे चुल्लू भर पानी देने वाला मिलता है वह बहुत क्रोधित हो जाता है।

उत्तर: (क) अगर तुम किसी की सहायता नहीं करोगे तो तुम्हारी परेशानी के वक्त तुम्हें भी कोई चुल्लू भर पानी देने वाला नहीं मिलेगा।

13. 'घुड़कियाँ खाना'— का सही अर्थ क्या है?

(क) डाँट-डपट सहना। (ख) बदनाम होना।
(ग) परेशान होना। (घ) कार्य में सफल होना।

उत्तर: (क) डाँट-डपट सहना।

14. 'कठोरतापूर्वक व्यवहार करना' का सही मुहावरा कौनसा है?

(क) घाव पर नमक छिड़कना।
(ख) जिगर के टुकड़े-टुकड़े होना।
(ग) आँखें फोड़ना।
(घ) आड़े हाथों लेना।

उत्तर: (घ) आड़े हाथों लेना

15. 'हिम्मत टूटना' मुहावरे का सही अर्थ क्या है?

(क) दिल पर भारी आघात लगना।
(ख) बहुत परेशान होना।
(ग) साहस समाप्त होना। (घ) ठंडा पड़ना।

उत्तर: (ग) साहस समाप्त होना।

3. पठित पद्यांश

(I) साखी

1. ऐसी बाँणी बोलिए, मन का आपा खोइ।
अपना तन सीतल करै, औरन कौं सुख होइ॥
कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढै बन माँहि।
ऐसैं घटि घटि राँम है, दुनियाँ देखै नाँहिं॥

(i) कबीर के अनुसार मनुष्य की वाणी कैसी होनी चाहिए?

(क) अहंकाररहित मधुर वाणी
(ख) अहंकाररहित कटु वाणी
(ग) अहंकारमुक्त सत्य वाणी
(घ) शांत और धीमी वाणी

उत्तर: (क) अहंकाररहित मधुर वाणी

(ii) 'तन की शीतलता' का मतलब—

(क) प्रभु भक्ति में समरस होना।
(ख) शरीर को ठंड लगना।
(ग) मधुर वाणी से क्रोध पर नियंत्रण पाना।
(घ) सुख और शांति का अनुभव करना।

उत्तर: (ग) मधुर वाणी से क्रोध पर नियंत्रण पाना।

(iii) 'कस्तूरी कुंडलि बसै' इस पंक्ति में कुंडलि का अर्थ—

(क) मन (ख) आँखें
(ग) नाभि (घ) मस्तक

उत्तर: (ग) नाभि

(iv) 'मन का आपा खोइ'—पंक्ति का अर्थ—

(क) मन का संतुलन खोना।
(ख) अपने आप खो जाना।
(ग) मन से ईश्वर में लीन होना।
(घ) अहंकार का त्याग करना।

उत्तर: (घ) अहंकार का त्याग करना।

2. जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाँहि।
सब अँधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या माँहि॥
सुखिया सब संसार है, खायै अरू सोवै।
दुखिया दास कबीर है, जागै अरू रोवै॥
बिरह भुवंगम तन बसै, मंत्र न लागै कोइ।
राम बियोगी ना जिवै, जिवै तो बौरा होइ॥

(i) जब मैं था तब हरि नहीं—इस पंक्ति में 'मैं' से क्या अभिप्राय है?

(क) स्वयंम् (ख) भगवान
(ग) कवि (घ) अहंकार

उत्तर: (घ) अहंकार

**(ii) सब अँधियारा मिटि गया, जब दीपक देखा माँहि।
इन पंक्ति में 'अँधियारा' किसका प्रतीक है?**

(क) अज्ञान तथा मन के दूषित विचार
(ख) अंधेरा
(ग) काली खौफनाक रात
(घ) जीवन के दुख तथा पीड़ा

उत्तर: (क) अज्ञान तथा मन के दूषित विचार

(iii) 'दुखिया दास कबीर है, जागै अरु रोवै—सही आशयार्थ चुनिए।

(क) कबीर दुखी हैं क्योंकि उन्हें जागना पड़ रहा है और नींद नहीं आ रही।
(ख) संसारिक दुखों के विचार से कबीर जी दुखी हैं और उसके हल के बारे में सोचकर जाग रहे हैं।
(ग) क्षणिक सुखरूपी अज्ञान के अंधकार में सुख से सोने वाले लोग ज्ञानरूपी ईश्वरभक्ति के सच्चे रूप से वंचित हैं, इसी चिंता में कबीर जी दुखी हैं।
(घ) कड़ी तपस्या के बावजूद, रातभर जागकर भी ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो रही इससे कबीर जी दुखी हैं।

उत्तर: (ग) क्षणिक सुखरूपी अज्ञान के अंधकार में सुख से सोने वाले लोग ज्ञानरूपी ईश्वरभक्ति के सच्चे रूप से वंचित हैं, इसी चिंता में कबीर जी दुखी हैं।

(iv) राम बियोगी ना जिवै, जिवै तो बौरा होई—उचित आशयार्थ है—

(क) राम के वियोग में अयोध्या का जीवन कठिन हुआ था।
(ख) राम के वियोग में उनके पिता दशरथ जी ने प्राण त्याग दिये और उनका जीवन अंत हुआ।
(ग) राम के वियोग में जो जीवित रहे वो बौखला गए।
(घ) राम तथा ईश्वर के वियोग में मनुष्य जीवित नहीं रह सकता अगर जीवित रहता भी है तो उसकी स्थिति पागलों जैसी होती है।

उत्तर: (घ) राम तथा ईश्वर के वियोग में मनुष्य जीवित नहीं रह सकता अगर जीवित रहता भी है तो उसकी स्थिति पागलों जैसी होती है।

3. निंदक नेड़ा राखिये, आँगणि कुटी बँधाइ।
बिन साबण पाँणीं बिना, निरमल करै सुभाइ॥
पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न कोइ।
ऐकै अषिर पीव का, पढ़ै सु पंडित होइ॥
हम घर जाल्या आपणाँ, लिया मुराड़ा हाथि।
अब घर जालौं तास का, जे चलै हमारे साथि॥

(i) 'निकट' शब्द का कौन सा पर्यायवाची इस पद में आया है—

(क) अषिर (ख) नेड़ा
(ग) पीव (घ) जाल्या

उत्तर: (ख) नेड़ा

(ii) 'जलती हुई मशाल' किसका प्रतीक है'—

(क) तपस्या (ख) ज्ञान
(ग) मोह (घ) त्याग

उत्तर: (ग) मोह

(iii) अषिर, मुवा, पीव, मुराडा इनका कबीर की साखियों में क्या अर्थ है?

(क) मरना, जलती लकड़ी, प्रिय, अक्षर
(ख) जलती लकड़ी, प्रिय, मरना, अक्षर
(ग) प्रिय, जलती लकड़ी, अक्षर, मरना
(घ) अक्षर, मरना, प्रिय, जलती लकड़ी

उत्तर: (घ) अक्षर, मरना, प्रिय, जलती लकड़ी

(iv) 'अब घर जालौं तास का, जे चलैं हमारे साथि' का उचित आशय है—

(क) जिनका घर जला है उन साथियों को कवि तास का घर दिलाएँगे
(ख) कवि साथियों को आवाहन कर रहे हैं कि तास का घर जला दो।
(ग) जले हुए तास के घर को कवि साथियों की मदद से दोबारा बनाएँगे।
(घ) कवि उनके विचारों के साथ होने वाले लोगों के मोह माया युक्त घर ज्ञानरूपी प्रकाश से जला देंगे।

उत्तर: (घ) कवि उनके विचारों के साथ होने वाले लोगों के मोह माया युक्त घर ज्ञानरूपी प्रकाश से जला देंगे।

(II) पद

1. हरि आप हरो जन री भीर।
द्रोपदी री लाज राखी, आप बढ़ायो चीर।
भगत कारण रूप नरहरि, धर्‌यो आप सरीर।
बूढ़तो गजराज राख्यो, काटी कुण्जर पीर।
दासी मीराँ लाल गिरधर, हरो म्हारी भीर॥

(i) मीराबाई ने हरी से विनती करते हुए निम्न में से कौन-सा उदाहरण नहीं दिया—

(क) जिस प्रकार श्रीकृष्ण ने द्रौपदी की लाज रखी
(ख) जिस प्रकार श्रीकृष्ण ने प्रहलाद को बचाया।
(ग) जिस प्रकार श्रीकृष्ण ने हाथी को बचाया।
(घ) जिस प्रकार श्रीकृष्ण ने अर्जुन को बचाया।

उत्तर: (घ) जिस प्रकार श्रीकृष्ण ने अर्जुन को बचाया।

(ii) श्रीकृष्ण ने नरसिंह का रूप धारण करके किसको बचाया—

(क) हाथी (ख) प्रहलाद
(ग) द्रौपदी (घ) अभिमन्यु

उत्तर: (ख) प्रहलाद

(iii) द्रौपदी को किसने अपमानित किया था?

(क) दु:शासन (ख) नरसिंह
(ग) पांडव (घ) कौरव

उत्तर: (क) दु:शासन

(iv) हाथी की रक्षा भगवान श्रीकृष्ण ने कैसे की?

(क) जख्मी हाथी को शेर के मुँह से बचाकर।
(ख) हाथी को शिकारियों से बचाकर।
(ग) डूबते हाथी को मगरमच्छ के मुँह से बचाकर।
(घ) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर: (ग) डूबते हाथी को मगरमच्छ के मुँह से बचाकर।

2. स्याम म्हाने चाकर राखो जी,
गिरधारी लाला म्हाँने चाकर राखोजी।
चाकर रहस्यूँ बाग लगास्यूँ नित उठ दरसण पास्यूँ।
बिन्दरावन री कुंज गली में, गोविन्द लीला गास्यूँ।

(i) मीरा हरि को किस नाम से पुकारती हैं?

(क) स्याम (ख) कृष्णजी
(ग) गिरिधर (घ) लाल

उत्तर: (क) स्याम

(ii) मीरा भगवान श्रीकृष्ण की क्या बनना चाहती हैं?

(क) पत्नी (ख) सखी
(ग) दासी (घ) मार्गदर्शिका

उत्तर: (ग) दासी

(iii) इस पद में मीरा प्रार्थना करते हुए ये नहीं कहती हैं—

(क) वृंदावन की गलियों में कृष्ण के साथ सैर करना।
(ख) वृंदावन की कुंज गलियों में कृष्ण की लीला के गान गाना।
(ग) बाग-बगीचे लगाना।
(घ) कृष्ण के दर्शन करना।

उत्तर: (क) वृंदावन की गलियों में कृष्ण के साथ सैर करना

(iv) प्रभु की चाकर बनकर मीरा क्या करना चाहती हैं—

(क) बाग-बगीचे सजाना। (ख) पेड़ पौधे से बातें करना।
(ग) वृंदावन की सैर करना।(घ) फूलों की माला करना।

उत्तर: (क) बाग-बगीचे सजाना।

3. चाकरी में दरसण पास्यूँ, सुमरण पास्यूँ खरची।
भाव भगती जागीरी पास्यूँ, तीनूं बाताँ सरसी।

(i) भगवान कृष्ण की सेवा से मीराबाई को प्राप्त होगा—

(क) धन दौलत (ख) भक्ति का साम्राज्य
(ग) भक्ति रस (घ) वृंदावन में प्रवेश

उत्तर: (ख) भक्ति का साम्राज्य

(ii) मीरा के अनुसार कृष्ण के नाम स्मरण से कौनसी तीन बातें उनके जीवन में बस जाएँगी?

(क) दर्शन-स्मरण-भावभक्ति।

(ख) बाग-बगीचे-वृंदावन-हरि के दर्शन।

(ग) हरि स्मरण-भक्ति की जागीर-सेवा।

(घ) हरि दर्शन-गोविंद गीत-प्रभु चाकरी।

उत्तर: (क) दर्शन-स्मरण-भावभक्ति

(iii) 'चाकरी में दरसण पास्यूँ, सुमरण पास्यूँ खरची' इस पंक्ति में मीरा क्या कह रही है?

(क) दासी बनकर मीरा श्रीकृष्ण जी के पास रहेंगी और पारिश्रमिक के रूप में प्रभु को स्मरण करना प्राप्त कर सकेंगी।

(ख) कृष्ण के दर्शन पाने को मीरा गीत गाएँगी।

(ग) कृष्ण के दर्शन पाने को मीरा गलियारों में घूमेंगी।

(घ) कृष्ण की सेविका बनकर वो कृष्ण के सामने नृत्य कर उनको रिझाएँगी।

उत्तर: (क) दासी बनकर मीरा श्रीकृष्ण जी के पास रहेंगी और पारिश्रमिक के रूप में प्रभु को स्मरण करना प्राप्त कर सकेंगी।

(iv) मीरा को श्रीकृष्ण के पास रहने के कौन से लाभ होंगे?

(क) उसकी भाव भक्ति के साम्राज्य में विस्तार होगा।

(ख) श्रीकृष्ण के दर्शन उसे हर पल प्राप्त होंगे।

(ग) उसको कृष्ण के नामस्मरण का अवसर प्राप्त हो जायेगा।

(घ) ये सभी।

उत्तर: (घ) ये सभी।

4. मोर मुगट पीताम्बर सौहे, गल वैजन्ती माला।
बिन्दरावन में धेनु चरावे, मोहन मुरली वाला।
ऊँचा ऊँचा महल बणावं बिच बिच राखूँ बारी।

(i) मीरा के पदों में कृष्ण का रूप सौंदर्य किस प्रकार दिया गया है?

(क) लाल वस्त्र में कृष्ण सुंदर लगते हैं।

(ख) गले में गुलाब के फूलों की माला है।

(ग) पीले वस्त्र पर वैजन्तीमाला शोभा देती है।

(घ) बांसुरी पर मोर पंख सुंदर दिखते हैं।

उत्तर: (ग) पीले वस्त्र पर वैजन्तीमाला शोभा देती है।

(ii) मीरा महल में बहुत सारी खिड़कियाँ क्यों रखना चाहती हैं?

(क) बगीचे का ध्यान रखने के लिए।

(ख) श्रीकृष्ण के कहीं से भी दर्शन पाने के लिए।

(ग) महल को हवादार बनाने के लिए।

(घ) सूरज की किरणों को महलों में प्रवेश हो इसलिए।

उत्तर: (ख) श्रीकृष्ण के कहीं से भी दर्शन पाने के लिए।

(iii) श्रीकृष्ण के माथे पर कौनसा मुकुट शोभित है?

(क) मोरपंखों का मुकुट (ख) सोने का मुकुट

(ग) रत्नजड़ित मुकुट (घ) दुर्लभ मुकुट

उत्तर: (क) मोरपंखों का मुकुट

(iv) 'कुसुम्बी' शब्द का अर्थ क्या है—

(क) पीला (ख) लाल

(ग) मोरपंखी (घ) नीला

उत्तर: (ख) लाल

5. साँवरिया रा दरसण पास्यूँ, पहर कुसुम्बी सारी।
आधी रात प्रभु दरसण, दीज्यो जमनाजी रे तीरां।
मीराँ रा प्रभु गिरधर नागर, हिवड़ो घणो अधीराँ॥

(i) 'पास्यूँ' शब्द का क्या अर्थ है?

(क) पानी (ख) पीना

(ग) परोसना (घ) पाना

उत्तर: (घ) पाना

(ii) 'हिवडो धणो अधीराँ काव्य पक्ति का मतलब—

(क) सारी गोमाताएँ आपकी सुरीली बांसुरी सुनने के लिए बहुत अधीर तथा व्याकुल हैं।

(ख) मेरा मन आपसे मिलने के लिए बहुत ही अधीर और व्याकुल है।

(ग) सारा वृंदावन आपकी प्रतीक्षा कर रहा है।

(घ) बाग, बगीचे, फूल, पंछी (सृष्टि) आपका दर्शन पाने के लिए बेचैन है।

उत्तर: (ख) मेरा मन आपसे मिलने के लिए बहुत ही अधीर और व्याकुल है।

(iii) मीराबाई आधी रात को क्या करना चाहती हैं?

(क) वृंदावन जाना चाहती हैं।

(ख) बाँसुरी सुनना चाहती हैं।

(ग) कुसुम्बी रंग की सारी पहनकर यमुना तट पर श्रीकृष्ण से मिलना चाहती हैं।

(घ) भजन करना चाहती हैं।

उत्तर: (ग) कुसुम्बी रंग की सारी पहनकर यमुना तट पर श्रीकृष्ण से मिलना चाहती हैं।

(iv) मीराबाई आधी रात को ही कृष्ण जी से क्यों मिलना चाहती है?

(क) मीराबाई कृष्णजी से मिलने को इतनी अधीर और व्याकुल हैं कि वे दिन उभरने का इंतजार नहीं कर सकतीं।

(ख) आधी रात को शांत समय होता है और प्रभु के दर्शन वो रात के शांती में लेना चाहती हैं।

(ग) दिन भर मीराबाई प्रभु भक्ति में तल्लीन रहती हैं।

(घ) मीराबाई को प्रभु के लिए उनके बाग-बगीचे, वृंदावन आने से पहले सुशोभित करने में व्यस्त रहेंगी।

उत्तर: (क) मीराबाई कृष्णजी से मिलने को इतनी अधीर और व्याकुल हैं कि वे दिन उभरने का इंतजार नहीं कर सकतीं।

4. पठित गद्यांश

(I) बड़े भाई साहब

1. सालाना इम्तिहान हुआ। भाई साहब फेल हो गए, मैं पास हो गया और दरजे में प्रथम आया। मेरे और उनके बीच में केवल दो साल का अंतर रह गया। जी में आया, भाई साहब को आड़े हाथों लूँ—'आपकी वह घोर तपस्या कहाँ गई? मुझे देखिए, मजे से खेलता भी रहा और दरजे में अव्वल भी हूँ।' लेकिन वह इतने दुखी और उदास थे कि मुझे उनसे दिली हमदर्दी हुई और उनके घाव पर नमक छिड़कने का विचार ही लज्जास्पद जान पड़ा। हाँ, अब मुझे अपने ऊपर कुछ अभिमान हुआ और आत्मसम्मान भी बढ़ा। भाई साहब का वह रौब मुझ पर न रहा। आज़ादी से खेलकूद में शरीक होने लगा। दिल मजबूत था। अगर उन्होंने फिर मेरी फजीहत की, तो साफ कह दूँगा—'आपने अपना खून जलाकर कौन-सा तीर मार लिया? मैं तो खेलते-कूदते दरजे में अव्वल आ गया।' जबान से यह हेकड़ी जताने का साहस न होने पर भी मेरे रंग-ढंग से साफ जाहिर होता था कि भाई साहब का वह आतंक मुझ पर नहीं था। भाई साहब ने इसे भाँप लिया—उनकी सहज बुद्धि बड़ी तीव्र थी और एक दिन जब मैं भोर का सारा समय गुल्ली-डंडे की भेंट करके ठीक भोजन के समय लौटा, तो भाई साहब ने मानो तलवार खींच ली और मुझ पर टूट पड़े—देखता हूँ, इस साल पास हो गए और दरजे में अव्वल आ गए, तो तुम्हें दिमाग हो गया है, मगर भाईजान, घमंड तो बड़े-बड़े का नहीं रहा, तुम्हारी क्या हस्ती है? इतिहास में रावण का हाल तो पढ़ा ही होगा। उसके चरित्र से तुमने कौन-सा उपदेश लिया? या यों ही पढ़ गए? महज़ इम्तिहान पास कर लेना कोई चीज़ नहीं, असल चीज़ है बुद्धि का विकास। जो कुछ पढ़ो, उसका अभिप्राय समझो। रावण भूमंडल का स्वामी था। ऐसे राजाओं को चक्रवर्ती कहते हैं। आजकल अंग्रेजों के राज्य का विस्तार बहुत बढ़ा हुआ है, पर इन्हें चक्रवर्ती नहीं कह सकते। संसार में अनेक राष्ट्र अंग्रेजों का आधिपत्य स्वीकार नहीं करते, बिल्कुल स्वाधीन हैं। रावण चक्रवर्ती राजा था, संसार के सभी महीप उसे कर देते थे । बड़े-बड़े देवता उसकी गुलामी करते थे। आग और पानी के देवता भी उसके दास थे, मगर उसका अंत क्या हुआ? घमंड ने उसका नाम-निशान तक मिटा दिया, कोई उसे एक चुल्लू पानी देने वाला भी न बचा। आदमी और जो कुकर्म चाहे करे, पर अभिमान न करे, इतराये नहीं। अभिमान किया और दीन-दुनिया दोनों से गया।

(i) इम्तिहान का नतीजा ऐसे हुआ कि—

(क) लेखक के भाईसाहब अव्वल दरजे में आये और लेखक दूसरे दरजे में पास हुए।
(ख) भाई साहब दूसरे दरजे में आये और लेखक पहले।
(ग) लेखक पहले दरजे में पास आये और भाई साहब फेल हो गए।
(घ) लेखक फेल हो गए और भाई साहब पहले दरजे में पास हुए।

उत्तर: (ग) लेखक पहले दरजे में पास आये और भाई साहब फेल हो गए।

(ii) लेखक का आत्मसम्मान बढ़ा क्योंकि—

(क) भाई साहब फेल हो गए।
(ख) लेखक खेलते कूदते दरजे में अव्वल आया।
(ग) भाई साहब का रौब अब उन पर नहीं रहा।
(घ) लेखक को भाई साहब से दिली हमदर्दी हुई।

उत्तर: (ख) लेखक खेलते कूदते दरजे में अव्वल आया।

(iii) भाई साहब लेखक की फजीहत करते तो लेखक का जवाब होता—

(क) आपकी वो घोर तपस्या कहाँ गयी?
(ख) मैं तो खेलते कूदते दरजे में अव्वल आ गया।
(ग) मुझे देखिये, मैं खेलता भी रहा और दरजे में अव्वल भी हुआ।
(घ) मगर भाईजान, घमंड बड़े-बड़े का नहीं रहा, तुम्हारी क्या हस्ती है?

उत्तर: (ख) मैं तो खेलते कूदते दरजे में अव्वल आ गया।

(iv) भूमण्डल के स्वामी होने वाले राजाओं को—

(क) अधिपति कहते हैं। (ख) अव्वल कहते हैं।
(ग) घमंडी कहते हैं। (घ) चक्रवर्ती कहते हैं।

उत्तर: (घ) चक्रवर्ती कहते हैं।

(v) अभिमान करने वाले व्यक्ति का क्या हाल होता है?

(क) सब उसके अधीन हो जाते हैं।
(ख) सबका प्रिय हो जाता है।
(ग) दीन-दुनिया दोनों प्राप्त कर लेता है।
(घ) दीन-दुनिया दोनों से जाता है।

उत्तर: (घ) दीन-दुनिया दोनों से जाता है।

2. फिर सालाना इम्तिहान हुआ ओर कुछ ऐसा संयोग हुआ कि मैं फिर पास हुआ और भाई साहब फिर फेल हो गए। मैंने बहुत मेहनत नहीं की, पर न जाने कैसे दरज़े में अव्वल आ गया। मुझे खुद अचरज हुआ। भाई साहब ने प्राणांतक परिश्रम किया। कोर्स का एक-एक शब्द चाट गए थे, दस बजे रात तक इधर, चार बजे भोर से उधर, छः से साढ़े नौ तक स्कूल जाने के पहले। मुद्रा कांतिहीन हो गई थी, मगर बेचारे फेल हो गए। मुझे उन पर दया आती थी। नतीजा सुनाया गया, तो वह रो पड़े और मैं भी रोने लगा। अपने पास होने की खुशी आधी हो गई। मैं भी फेल हो गया होता, तो भाई साहब को इतना दु:ख न होता, लेकिन विधि की बात कौन टाले।

मेरे और भाई साहब के बीच में अब केवल एक दरजे का अंतर और रह गया। मेरे मन में एक कुटिल भावना उदय हुई कि कहीं भाई साहब एक साल और फेल हो जाएँ, तो मैं उनके बराबर हो जाऊँ, फिर वह किस आधार पर मेरी फजीहत कर सकेंगे, लेकिन मैंने इस विचार को दिल से बलपूर्वक निकाल डाला। आखिर वह मुझे मेरे हित के विचार से ही तो डाँटते हैं। मुझे इस वक्त अप्रिय लगता है अवश्य, मगर यह शायद उनके उपदेशों का ही असर है कि मैं दनादन पास हो जाता हूँ और इतने अच्छे नंबरों से।

अब भाई साहब बहुत कुछ नरम पड़ गए थे। कई बार डाँटने का अवसर पाकर भी उन्होंने धीरज से काम लिया। शायद अब वह खुद समझने लगे थे कि मुझे डाँटने का अधिकार उन्हें नहीं रहा, या रहा भी, तो बहुत कम। मेरी स्वच्छंदता भी बढ़ी। मैं उनकी सहिष्णुता का अनुचित लाभ उठाने लगा। मुझे कुछ ऐसी धारणा हुई कि मैं पास हो ही जाऊँगा, पढ़ूँ या न पढ़ूँ, मेरी तकदीर बलवान है, इसलिए भाई साहब के डर से जो थोड़ा-बहुत पढ़ लिया करता था, वह भी बंद हुआ। मुझे कनकौए उड़ाने

का नया शौक पैदा हो गया था और अब सारा समय पतंगबाजी की ही भेंट होता था, फिर भी मैं भाई साहब का अदब करता था और उनकी नज़र बचाकर कनकौए उड़ाता था। मांझा देना, कन्ने बाँधना, पतंग टूर्नामेंट की तैयारियाँ आदि समस्याएँ सब गुप्त रूप से हल की जाती थीं। मैं भाई साहब को यह संदेह न करने देना चाहता था कि उनका सम्मान और लिहाज़ मेरी नज़रों में कम हो गया है।

(i) छोटे भाई को किस बात का अचरज हुआ?

(क) प्राणांतक परिश्रम करने के बाद भी बड़े भाईसाहब फेल हुए।
(ख) खुद को ज्यादा मेहनत न करने पर भी अव्वल दरजा प्राप्त हुआ।
(ग) सालाना इम्तिहान में एक संयोग हुआ।
(घ) बड़े भाईसाहब कोर्स का एक एक शब्द चाट गए थे।

उत्तर: (ख) खुद को ज्यादा मेहनत न करने पर भी अव्वल दरजा प्राप्त हुआ।

(ii) छोटे भाई ने अपने अक्सर पास होने का श्रेय बड़े भाई को दिया क्योंकि वे—

(क) प्राणांतक परिश्रम करते।
(ख) उनकी हमेशा फजीहत करते।
(ग) उनको हमेशा उपदेश देते।
(घ) वे सालाना इम्तिहान में फेल हो जाते।

उत्तर: (ग) उनको हमेशा उपदेश देते।

(iii) छोटे भाई के मन में पैदा हुई इनमें से कौनसी भावना कुटिल नहीं थी—

(क) भाईसाहब एक साल और फेल हो जाये।
(ख) भाईसाहब छोटे भाई के हित में डाँटते।
(ग) भाईसाहब फेल होने से वे बराबर हो सके।
(घ) फिर भाईसाहब उनकी फजीहत नहीं कर पाएंगे।

उत्तर: (ख) भाईसाहब छोटे भाई के हित में डाँटते।

(iv) भाईसाहब नरम पड़ गए क्योंकि—

(क) छोटे भाई की स्वछंदता बढ़ी।
(ख) उन्हें छोटे भाई को डांटने का अवसर नहीं मिला।
(ग) वो सहिष्णु बन गए।
(घ) वो खुद ही समझने लगे कि उन्हें डांटने का अधिकार नहीं रहा।

उत्तर: (घ) वो खुद ही समझने लगे कि उन्हें डांटने का अधिकार नहीं रहा।

(v) लेखक के अपने पास होने की खुशी आधी क्यों हो गई?

(क) भाई से डाँट पड़ने के कारण।
(ख) भाई के फेल होने के कारण।
(ग) कनकौआ न पकड़ पाने के कारण।
(घ) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर: (ख) भाई के फेल होने के कारण।

(II) तताँरा वामीरो कथा

4. सदियों पूर्व, जब लिटिल अंदमान और कार-निकोबार आपस में जुड़े हुए थे तब वहाँ एक सुंदर सा गाँव था। पास में एक सुंदर और शक्तिशाली युवक रहा करता था। उसका नाम था तताँरा। निकोबारी उसे बेहद प्रेम करते थे। तताँरा एक नेक और मददगार व्यक्ति था। सदैव दूसरों की सहायता के लिए तत्पर रहता। अपने गाँववालों को ही नहीं, अपितु समूचे द्वीपवासियों की सेवा करना अपना परम कर्तव्य समझता था। उसके इस त्याग की वजह से वह चर्चित था। सभी उसका आदर करते। वक्त मुसीबत में उसे स्मरण करते और वह भागा-भागा वहाँ पहुँच जाता। दूसरे गाँवों में भी पर्व-त्यौहारों के समय उसे विशेष रूप से आमंत्रित किया जाता। उसका व्यक्तित्व तो आकर्षक था ही, साथ ही आत्मीय स्वभाव की वजह से लोग उसके करीब रहना चाहते। पारंपरिक पोशाक के साथ वह अपनी कमर में सदैव एक लकड़ी की तलवार बाँधे रहता। लोगों का मत था, बावजूद लकड़ी की होने पर, उस तलवार में अद्‌भुत दैवीय शक्ति थी। तताँरा अपनी तलवार को कभी अलग न होने देता। उसका दूसरों के सामने उपयोग भी न करता। किंतु उसके चर्चित साहसिक कारनामों के कारण लोग-बाग तलवार में अद्‌भुत शक्ति का होना मानते थे। तताँरा की तलवार एक विलक्षण रहस्य थी।

एक शाम तताँरा दिनभर के अथक परिश्रम के बाद समुद्र किनारे टहलने निकल पड़ा। सूरज समुद्र से लगे क्षितिज तले डूबने को था। समुद्र से ठंडी बयारें आ रही थीं। पक्षियों की सायंकालीन चहचहाहटें शनैः शनैः क्षीण होने को थीं। उसका मन शांत था। विचारमग्न तताँरा समुद्री बालू पर बैठकर सूरज की अंतिम रंग-बिरंगी किरणों को समुद्र पर निहारने लगा। तभी कहीं पास से उसे मधुर गीत गूँजता सुनाई दिया। गीत मानो बहता हुआ उसकी तरफ आ रहा हो। बीच-बीच में लहरों का संगीत सुनाई देता। गायन इतना प्रभावी था कि वह अपनी सुध-बुध खोने लगा। लहरों के एक प्रबल वेग ने उसकी तंद्रा भंग की। चैतन्य होते ही वह उधर बढ़ने को विवश हो उठा जिधर से अब भी गीत के स्वर बह रहे थे। वह विकल सा उस तरफ बढ़ता गया। अंततः उसकी नज़र एक युवती पर पड़ी जो ढलती हुई शाम के सौंदर्य में बेसुध, एकटक समुद्र की देह पर डूबते आकर्षक रंगों को निहारते हुए गा रही थी। यह एक शृंगार गीत था। उसे ज्ञात ही न हो सका कि कोई अजनबी युवक उसे निःशब्द ताके जा रहा है। एकाएक एक ऊँची लहर उठी और उसे भिगो गई। वह हडबड़ाहट में गाना भूल गई। इसके पहले कि वह सामान्य हो पाती, उसने अपने कानों में गूँजती गंभीर आकर्षक आवाज़ सुनी।

"तुमने एकाएक इतना मधुर गाना अधूरा क्यों छोड़ दिया?" तताँरा ने विनम्रतापूर्वक कहा।

अपने सामने एक सुंदर युवक को देखकर वह विस्मित हुई। उसके भीतर किसी कोमल भावना का संचार हुआ। किंतु अपने को संयतकर उसने बेरुखी के साथ जवाब दिया।

"पहले बताओ! तुम कौन हो, इस तरह मुझे घूरने और इस असंगत प्रश्न का कारण? अपने गाँव के अलावा किसी और गाँव के युवक के प्रश्नों का उत्तर देने को मैं बाध्य नहीं। यह तुम भी जानते हो।"

(i) लोग तताँरा के करीब रहना चाहते क्योंकि—

(क) उसमें अद्‌भुत दैवीय शक्ति थी।
(ख) उसकी तलवार रहस्यमय थी।
(ग) उसका स्वभाव आत्मीय था।
(घ) वह पारम्परिक पोशाक पहनता था।

उत्तर: (ग) उसका स्वभाव आत्मीय था।

(ii) वामीरो का गीत थम जाने का कारण है—

(क) अजनबी युवक का उसे निशब्द ताकना।

(ख) एकाएक ऊँची लहर का उठना।

(ग) सामने सुन्दर ततँारा को देख मन में कोमल भावना का संचार होना।

(घ) लहर में भीगने से हड़बड़ाहट में भूल जाना।

उत्तर: (घ) लहर में भीगने से हड़बड़ाहट में भूल जाना।

(iii) वामीरो के 'यह तुम भी जानते हो' में 'यह' का मतलब—

(क) उसकी आवाज आकर्षक थी।

(ख) उसके गाना अचानक बंद करने का कारण।

(ग) ततँारा का प्रश्न असंगत था।

(घ) गाँव के युवक के अलावा किसी को जवाब देने में वो बाध्य नहीं थी।

उत्तर: (घ) गाँव के युवक के अलावा किसी को जवाब देने में वो बाध्य नहीं थी।

(iv) गद्यांश में आये शनैः शनैः का मतलब—

(क) शाम ढलते ही। (ख) धीरे-धीरे

(ग) लगातार (घ) तेज तेज

उत्तर: (ख) धीरे-धीरे

(v) ततँारा को देखकर वामीरो के मन में क्या भावना आई?

(क) गुस्से की। (ख) घृणा की।

(ग) कोमलता की। (घ) द्वेष की।

उत्तर: (ग) कोमलता की।

(III) अब कहाँ दूसरे के दुःख से दुखी होने वाले

3. दुनिया कैसे वजूद में आई? पहले क्या थी? किस बिंदु से इसकी यात्रा शुरू हुई? इन प्रश्नों के उत्तर विज्ञान अपनी तरह से देता है, धार्मिक ग्रंथ अपनी-अपनी तरह से। संसार की रचना भले ही कैसे भी हुई हो लेकिन धरती किसी एक की नहीं है। पंछी, मानव, पशु, नदी, पर्वत, समंदर आदि की इसमें बराबर की हिस्सेदारी है। यह और बात है कि इस हिस्सेदारी में मानव जाति ने अपनी बुद्धि से बड़ी-बड़ी दीवारें खड़ी कर दी हैं। पहले पूरा संसार एक परिवार के समान था अब टुकड़ों में बँटकर एक-दूसरे से दूर हो चुका है। पहले बड़े-बड़े दालानों-आँगनों में सब मिल-जुलकर रहते थे अब छोटे-छोटे डिब्बे जैसे घरों में जीवन सिमटने लगा है। बढ़ती हुई आबादियों ने समंदर को पीछे सरकाना शुरू कर दिया है, पेड़ों को रास्तों से हटाना शुरू कर दिया है, फैलते हुए प्रदूषण ने पंछियों को बस्तियों से भगाना शुरू कर दिया है। बारूदों की विनाशलीलाओं ने वातावरण को सताना शुरू कर दिया। अब गरमी में ज्यादा गरमी, बेवक्त की बरसातें, जलजले, सैलाब, तूफान और नित नए रोग, मानव और प्रकृति के इसी असंतुलन के परिणाम हैं। नेचर की सहनशक्ति की एक सीमा होती है। नेचर के गुस्से का एक नमूना कुछ साल पहले बंबई (मुम्बई) में देखने को मिला था और यह नमूना इतना डरावना था कि बंबई निवासी डरकर अपने-अपने पूजा-स्थल में अपने खुदाओं से प्रार्थना करने लगे थे। कई सालों से बड़े-बड़े बिल्डर समंदर को पीछे धकेल कर उसकी जमीन को हथिया रहे थे। बेचारा समंदर लगातार सिमटता जा रहा था। पहले उसने अपनी फैली हुई टाँगें समेटीं, थोड़ा सिमटकर बैठ गया। फिर जगह कम पड़ी तो उकड़ूँ बैठ गया। फिर खड़ा हो गया...जब खड़े रहने की जगह कम पड़ी तो उसे गुस्सा आ गया। जो जितना बड़ा होता है उसे उतना ही कम गुस्सा आता है। परंतु आता है तो रोकना मुश्किल हो जाता है, और यही हुआ, उसने एक रात अपनी लहरों पर दौड़ते हुए तीन जहाजों को उठाकर बच्चों की गेंद की तरह तीन दिशाओं में फेंक दिया। एक वर्ली के समंदर के किनारे पर आकर गिरा, दूसरा बांद्रा में कार्टर रोड के सामने औंधे मुँह और तीसरा गेट-वे-ऑफ इंडिया पर टूट-फूटकर सैलानियों का नज़ारा बना। बावजूद कोशिश, वे फिर से चलने-फिरने के काबिल नहीं हो सके।

(i) समंदर लगातार सिमटते रहने की वजह—

(क) मानव की हिस्सेदारी।

(ख) बिल्डरों का समंदर को पीछे धकेलकर जमीन हथिया लेना।

(ग) नेचर की सहनशक्ति।

(घ) प्रकृति के असंतुलन का परिणाम।

उत्तर: (ख) बिल्डरों का समंदर को पीछे धकेलकर जमीन हथिया लेना।

(ii) बारूदों की विनाश लीलाओं ने ये परिणाम नहीं किये—

(क) बेवक्त की बरसातें।

(ख) समंदर को पीछे सरकाना।

(ग) तूफान और नित नए रोग।

(घ) सैलाब।

उत्तर: (ख) समंदर को पीछे सरकाना।

(iii) गुस्सा आने पर समंदर का दिखाया हुआ परिणाम—

(क) लगातार सिमटते जाना।

(ख) उकड़ू बैठ जाना।

(ग) तीन जहाजों को उठाकर तीन दिशाओं में फेंकना।

(घ) अपने पानी को लहरों को रोकना।

उत्तर: (ग) तीन जहाजों को उठाकर तीन दिशाओं में फेंकना।

(iv) लेखक के मुंबई देखने आने पर उन्हें मुंबई का नजारा कैसे दिखा?

(क) लोगों का भक्तिभाव से खुदा से प्रार्थना करना।

(ख) डरावना।

(ग) मुम्बईवासियों का समंदर किनारे टहलना।

(घ) गेट वे ऑफ इंडिया पर चलते फिरते सैलानियों की भीड़।

उत्तर: (ख) डरावना।

(v) पंछियों ने बस्तियों से भागना शुरू कर दिया—

(क) बढ़ती आबादी के कारण।

(ख) गरमी के कारण।

(ग) प्रदूषण के कारण।

(घ) सैलाब के कारण।

उत्तर: (ग) प्रदूषण के कारण।

5. अध्याय पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न (पद्य)

(I) साखी

1. कबीर के अनुसार कौन ज्ञानी नहीं बन पाया?

(क) मोटी पुस्तकें पढ़ने वाला। (ख) दूसरों को ज्ञान देने वाला।
(ग) संन्यास ग्रहण करने वाला। (घ) अपनी प्रशंसा करने वाला।

उत्तर: (क) मोटी पुस्तकें पढ़ने वाला।

2. अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने क्या सुझाव दिया है?

(क) निंदक को दूर रखने का।
(ख) सज्जन की संगत में रहने का।
(ग) निंदक को पास रखने का।
(घ) ईश्वर भक्ति में ध्यान लगाने का।

उत्तर: (ग) निंदक को पास रखने का।

3. कबीर की साखियों के अनुसार सुखी कौन है?

(क) सांसारिक लोग जो सोते और खाते हैं।
(ख) आध्यात्मिक लोग जो ईश्वर का नाम लेते हैं।
(ग) जो स्वार्थों से ऊपर उठ गए हैं।
(घ) जिसने स्वयं को नियंत्रित कर लिया।

उत्तर: (क) सांसारिक लोग जो सोते और खाते हैं।

4. दीपक दिखाई देने से अँधेरा कैसे मिट जाता है?

(क) बादलों के छँट जाने पर।
(ख) अहंकार रूपी माया के दूर हो जाने पर।
(ग) सूर्य के उदय हो जाने पर।
(घ) अकारण चिंता न करने पर।

उत्तर: (ख) अहंकार रूपी माया के दूर हो जाने पर।

5. कबीर की साखियों पर किस भाषा का प्रभाव दिखाई देता है?

(क) अवधी (ख) राजस्थानी
(ग) भोजपुरी व पंजाबी (घ) ये सभी

उत्तर: (घ) ये सभी

6. ईश्वर कण-कण में व्याप्त है, किंतु हम उसे देख नहीं पाते, क्यों?

(क) आँखें बंद होने के कारण।
(ख) मन की चंचलता के कारण।
(ग) आँखों से स्पष्ट न दिखाई देने के कारण।
(घ) मन में छिपे अहंकार के कारण।

उत्तर: (घ) मन में छिपे अहंकार के कारण।

7. कबीर ने राम और कस्तूरी में क्या समानता बताई है?

(क) दोनों वन में रहते हैं। (ख) दोनों सुगंधित हैं।
(ग) दोनों तरल पदार्थ हैं। (घ) दोनों भीतर स्थित हैं।

उत्तर: (घ) दोनों भीतर स्थित हैं।

8. 'बिरह भुवंगम तन बसै, मंत्र न लागे कोइ' पंक्ति का भावार्थ क्या है?

(क) मंत्र जपने से स्वास्थ्य अच्छा रहता है।
(ख) विरह के समय मंत्र ही काम करते हैं।
(ग) जब शरीर में किसी के बिछुड़ने का दु:ख हो तो कोई दवा या मंत्र काम नहीं करता
(घ) विरह व्यक्ति को मंत्रों की ओर ले जाता है।

उत्तर: (ग) जब शरीर में किसी के बिछुड़ने का दु:ख हो तो कोई दवा या मंत्र काम नहीं करता

9. 'कस्तूरी कुंडलि बसै........' पंक्ति में कुंडलि का क्या अर्थ है?

(क) मृग (ख) नाभि
(ग) आँख (घ) पाँव

उत्तर: (ख) नाभि

10. मन का आपा खोने से क्या अभिप्राय है?

(क) मन में अहंकार उपस्थित होना।
(ख) मन में प्रभु का लीन होना।
(ग) अहंकार का त्याग करना।
(घ) स्वयं में खोए रहना।

उत्तर: (ग) अहंकार का त्याग करना।

(II) पद

1. मीरा आधी रात को श्रीकृष्ण को कहाँ पर मिलना चाहती हैं?

(क) अपने घर पर। (ख) यमुना के तट पर।
(ग) सखी के घर पर। (घ) मंदिर के आँगन में।

उत्तर: (ख) यमुना के तट पर।

2. मीराबाई अपने वेतन के रूप में क्या पाना चाहती हैं?

(क) सुंदर वस्त्राभूषण। (ख) महलों का सुख।
(ग) कृष्ण जी का स्मरण। (घ) कृष्ण जी का दर्शन।

उत्तर: (घ) कृष्ण जी का दर्शन।

3. मीरा श्रीकृष्ण के पास रहने का क्या लाभ बताती हैं?

(क) उसे श्रीकृष्ण को याद करने की जरूरत नहीं होगी।
(ख) उसे हमेशा दर्शन प्राप्त होंगे।
(ग) उसकी भाव भक्ति का साम्राज्य बढ़ता ही जाएगा।
(घ) उपरोक्त सभी।

उत्तर: (घ) उपरोक्त सभी।

4. मीरा अपने साँवरिया का दर्शन कैसी साड़ी पहनकर प्राप्त करना चाहती है?

(क) रेशमी साड़ी। (ख) खद्दर की साड़ी।
(ग) लाल रंग की साड़ी। (घ) हरे रंग की साड़ी।

उत्तर: (ग) लाल रंग की साड़ी।

5. पाठ 'पद' के आधार पर 'हिवड़ो घणो अधीराँ' से क्या आशय है?

(क) हृदय बहुत मजबूत है।
(ख) हृदय घड़े के समान है।
(ग) हृदय मिलन के लिए अधीर है।
(घ) हृदय बहुत पीड़ित है।

उत्तर: (ग) हृदय मिलन के लिए अधीर है।

6. मीरा के भक्ति भाव का साम्राज्य कैसे बढ़ेगा?

(क) मीरा के कृष्ण के पास रहने से
(ख) मीरा के गली-गली घूमने से
(ग) मीरा के दोहे लिखने से
(घ) मीरा के नृत्य करने से

उत्तर: (घ) मीरा के नृत्य करने से

7. श्रीकृष्ण के गले में कैसी माला सुशोभित हो रही है?

(क) गेंदे के फूलों की। (ख) गुलाब के फूलों की।
(ग) वैजयंती माला (घ) चमेली के फूलों की।

उत्तर: (ग) वैजयंती माला

8. मीराबाई श्रीकृष्ण को पाने के लिए क्या-क्या करने को तैयार है?

(क) बाग-बगीचे लगाने को। (ख) नाम स्मरण करने को।
(ग) दासी बनने को। (घ) ये सभी।

उत्तर: (घ) ये सभी।

9. 'तीनूँ बाताँ सरसी' से क्या आशय है?

(क) मीरा श्रीकृष्ण से तीन बातें करेंगी।
(ख) मीरा श्रीकृष्ण से तीन बार मुलाकात करेंगी।
(ग) मीरा श्रीकृष्ण से तीन वचन पूरे करेंगी।
(घ) मीरा भक्ति के तीनों रूपों का सुख प्राप्त करेंगी।

उत्तर: (घ) मीरा भक्ति के तीनों रूपों का सुख प्राप्त करेंगी।

10. 'सुमरण पास्यूँ खरची' से क्या तात्पर्य है?

(क) जेब खर्च के लिए बहुत रुपये मिलेंगे।
(ख) याद करने से पैसे प्राप्त हो जाएँगे।
(ग) जेब खर्च के रूप में प्रभु स्मरण का उपहार पाऊँगी।
(घ) स्मरण करने में पैसे खर्च नहीं होंगे।

उत्तर: (ग) जेब खर्च के रूप में प्रभु स्मरण का उपहार पाऊँगी।

6. अध्याय पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न (गद्य)

(I) बड़े भाई साहब

1. छोटे भाई ने अपनी शालीनता किसमें मान ली—

(क) बड़े भाई की नकल ना करने में।
(ख) बड़े भाई के अध्ययन में दखल ना देने में।
(ग) बड़े भाई की रचना को ना समझने में।
(घ) बड़े भाई के हुक्म को कानून समझने में।

उत्तर: (घ) बड़े भाई के हुक्म को कानून समझने में।

2. लेखक के सिर पर किसकी नंगी तलवार लटकती थी?

(क) आने वाली परीक्षा की।
(ख) बड़े भाई के गुस्से वाली डांट की।
(ग) पढ़ाई के भार की।
(घ) पिताजी के उपदेश की।

उत्तर: (ख) बड़े भाई के गुस्से वाली डांट की।

3. अभिमान किया और ________ से गया।

(क) घर परिवार से (ख) समाज से
(ग) देश से (घ) दीन-दुनिया से

उत्तर: (घ) दीन-दुनिया से

4. लेखक को अपनी लघुता का अनुभव तब हुआ जब—

(क) लेखक के मन में भाई के बारे में कुटिल भावना उत्पन्न हुई।
(ख) बड़े भाई ने लेखक के कनकौए उड़ाते पकड़े जाने पर उपदेश दिया।
(ग) जब कनकौए उड़ाते लेखक को देख बड़े भाई ने उनको थप्पड़ मारा।
(घ) लेखक को खरी-खोटी सुनाकर बड़े भाई खुद नाराज हो गए।

उत्तर: (ख) बड़े भाई ने लेखक के कनकौए उड़ाते पकड़े जाने पर उपदेश दिया।

5. 'बुनियाद ही पुख्ता ना हो, तो मकान कैसे पायेदार बने'। यह वाक्य लेखक ने किस संदर्भ में कहा?

(क) अपने बड़े भाई साहब के परीक्षा में बार-बार फेल होने के संबंध में।
(ख) अध्ययन से ज्यादा खेल में रूचि रखने के संदर्भ में।
(ग) बड़ा भाई खुद बेराह पर चलने लगा तो छोटे भाई को कैसे रोकेगा, बड़े भाई की सोच के संदर्भ में।
(घ) लेखक के मान में बड़े भाई के प्रति कुटिल भावना उत्पन्न होने के संदर्भ में।

उत्तर: (क) अपने बड़े भाई साहब के परीक्षा में बार-बार फेल होने के संबंध में।

6. 'लोहे के चने चबाना' मुहावरे का अर्थ है—

(क) अहंकारी को सबक सिखाना।
(ख) कठोर परिश्रम करना।
(ग) दाँत मजबूत होना।
(घ) खाना मिलना मुश्किल होना।

उत्तर: (ख) कठोर परिश्रम करना।

7. 'अंधे के हाथ बटेर लगना' मुहावरे का अर्थ है—

(क) अंधा होते हुए भी खजाना ढूँढ पाना।
(ख) बिना माँगे सब कुछ प्राप्त होना।
(ग) धन की प्राप्ति होना।
(घ) बिना योग्यता के बहुत कुछ मिलना।

उत्तर: (घ) बिना योग्यता के बहुत कुछ मिलना।

8. लेकिन हजारों बातें ऐसी हैं, जिनका ज्ञान उन्हें हमसे और 'तुमसे ज्यादा है—यह कथन किस संदर्भ में नहीं कहा गया?

(क) अपने छोटे भाई को जिंदगी के अनुभव की ताकत की नसीहत देने के संदर्भ में।
(ख) अपने छोटे भाई को अपने माता-पिता का उदाहरण देते हुए।
(ग) अपना छोटा भाई पढ़ाई छोड़कर गलत रास्ते पर ना भटके यह उपदेश देने के संदर्भ में।
(घ) अपने छोटे भाई के अव्वल नंबर आने से नाराज होने के संदर्भ में।

उत्तर: (घ) अपने छोटे भाई के अव्वल नंबर आने से नाराज होने के संदर्भ में।

9. बड़े भाई साहब पाठ का उद्देश्य है—

(क) छोटे भाई को गलत सीख ना मिले, वह अपने उद्देश्य से ना भटके और उसे सही व्यवहार की मिसाल मिलें—यह बड़े भाई का अंदरूनी प्यार भरा संदेश तमाम छोटों तक पहुँचे।
(ख) बड़ा और छोटा होने से कुछ नहीं होता, पढ़ाई करने से सब हासिल होता है।
(ग) परीक्षा में अव्वल दरजा प्राप्त करने के लिए पढ़ाई से ज्यादा खेलकूद जरूरी है।
(घ) काबिलियत ना होते हुए भी, सब कुछ प्राप्त होता है तो उस पर गर्व करना चाहिए।

उत्तर: (क) छोटे भाई को गलत सीख ना मिले, वह अपने उद्देश्य से ना भटके और उसे सही व्यवहार की मिसाल मिलें—यह बड़े भाई का अंदरूनी प्यार भरा संदेश तमाम छोटों तक पहुँचे।

10. 'इम्तिहान पास कर लेना कोई चीज नहीं, असल चीज़ है बुद्धि का विकास—सही आशय का चयन करें—

(क) पुस्तकों को न पढ़कर अच्छाई-बुराई में अंतर करना न आया तो पुस्तकें पढ़नी चाहिए।
(ख) परीक्षाएँ पास कर लेने पर भी अगर अच्छाई-बुराई का फर्क ना समझा और बुद्धि का विकास ना हुआ तो पढ़ाई व्यर्थ है।
(ग) इम्तिहान पास कर लेना महत्वपूर्ण बात है, बुद्धि का विकास अनुभव से होता रहेगा।
(घ) बुद्धि ना होते हुए भी इम्हिान पास कर सकते हैं।

उत्तर: (ख) परीक्षाएँ पास कर लेने पर भी अगर अच्छाई-बुराई का फर्क ना समझा और बुद्धि का विकास ना हुआ तो पढ़ाई व्यर्थ है।

(II) तताँरा-वामीरो कथा

1. ढ़ीठता की भी हद है, इस कथन में युवती तताँरा से किस ढ़ीठता की बात कर रही है—

(क) गाँव के नियमों को बार-बार पूछने की।
(ख) गीत गाओ बार-बार दोहराने की।
(ग) गीत थमने का प्रश्न पुनः पूछने की।
(घ) युवती के सुरीले कंठ की बार-बार सराहना करने की।

उत्तर: (ख) गीत गाओ बार-बार दोहराने की।

2. ततॉरा ने युवती से माफी माँगी क्योंकि—

(क) उसने युवती का रास्ता रोकने की गलती की।
(ख) उसने युवती से उसका नाम पूछा।
(ग) उसने युवती के चेहरे पर अपनी आँखें केंद्रित कर दी थी।
(घ) जीवन में पहली बार उसका मन विचलित हुआ था।

उत्तर: (घ) जीवन में पहली बार उसका मन विचलित हुआ था।

3. जिसका चित्त कहीं और हो—इस अर्थ का कौन-सा विशेषण पाठ में आया है?

(क) अनायास (ख) अन्यमनस्क
(ग) निर्निमेष (घ) अनवरत

उत्तर: (ख) अन्यमनस्क

4. वामीरो की कल्पना में ततॉरा का व्यक्तित्व कैसा था—

(क) साहसी अद्भुत युवक।
(ख) बेहद शांत, सभ्य और भोला।
(ग) बेहद गंभीर युवक।
(घ) सुंदर और बलिष्ठ युवक।

उत्तर: (क) साहसी अद्भुत युवक।

5. वामीरो और ततॉरा का संबंध संभव न था क्योंकि—

(क) लपाती के युवकों ने दोनों की प्रेम कहानी भाँप ली थी।
(ख) वामीरो और ततॉरा एक ही पासा गाँव के थे।
(ग) वामीरो और ततॉरा एक ही लपाती गाँव के थे।
(घ) रीति के अनुसार दोनों को एक ही गाँव का होना आवश्यक था।

उत्तर: (घ) रीति के अनुसार दोनों को एक ही गाँव का होना आवश्यक था।

6. सही वाक्य चुनिये—

(क) पशु-पर्व का आयोजन वामीरो के लपाती गाँव में हुआ।
(ख) पशु पर्व का आयोजन ततॉरा के पासा गाँव में हुआ।
(ग) पशु-पर्व का आयोजन ततॉरा के लपाती गाँव में हुआ।
(घ) पशु-पर्व का आयोजन वामीरो के पासा गाँव में हुआ।

उत्तर: (घ) पशु-पर्व का आयोजन वामीरो के पासा गाँव में हुआ।

7. 'ततॉरा किंकर्तव्यविमूढ़ था' का मतलब—

(क) ततॉरा उदास और चिंतित था।
(ख) ततॉरा कर्तव्यनिष्ठ था।
(ग) ततॉरा कुछ ना सूझने की अवस्था में था।
(घ) ततॉरा क्रोधित था।

उत्तर: (ग) ततॉरा कुछ ना सूझने की अवस्था में था।

8. होश संभलते ही ततॉरा को क्या महसूस हुआ?

(क) वामीरो चीखती हुई उसकी तरफ दौड़ती आ रही थी।
(ख) उसके सामने लोगों का सन्नाटेभरा जमावड़ा था।
(ग) खुद की असहाय परिस्थिति।
(घ) उसकी तरफ का द्वीप, समुद्र में धँसने लगा है।

उत्तर: (घ) उसकी तरफ का द्वीप, समुद्र में धँसने लगा है।

9. तताँरा और वामीरो के त्यागमयी अधूरी प्रेम कहानी के पश्चात गाँव में क्या बदलाव आया?

(क) कार-निकोबार के दो टुकड़ो को जोड़कर एक ही लिटल अंदमान किया गया।

(ख) दूसरे गाँवों में आपसी वैवाहिक संबंध होने लगे।

(ग) धँसने वाले द्वीप समूह को सख्त बनाया गया।

(घ) ऊपर दिए गए सभी बदलाव आ गए।

उत्तर: (ख) दूसरे गाँवों में आपसी वैवाहिक संबंध होने लगे।

10. ततााँरा-वामीरो लोककथा से मिली हुई सीख है-

(क) प्रेम में आत्मबलिदान देना चाहिए।

(ख) दूसरों की मदद करनी चाहिए।

(ग) विद्वेष की गहरी जड़ें उखाड़कर सबसे प्रेम से जुड़ना चाहिए।

(घ) क्रोध पर नियंत्रण रखना चाहिए।

उत्तर: (ग) विद्वेष की गहरी जड़ें उखाड़कर सबसे प्रेम से जुड़ना चाहिए।

(III) अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले

1. सूरज ढलते पेड़ों की पत्तों को नहीं तोड़ना चाहिए क्योंकि—

(क) ऐसे लेखक की माँ ने कहा है।

(ख) पेड़ खुश हो जाएँगे।

(ग) वे हज़रत मुहम्मद के अज़ीज़ हैं।

(घ) ऐसा करने से पेड़ रोएँगे।

उत्तर: (घ) ऐसा करने से पेड़ रोएँगे।

2. लेखक का घर पहले कहाँ था और अब कहाँ है?

(क) पहले सिंध में था, अब ग्वालियर में है।

(ख) पहले मुंबई के वर्सोवा में था, अब ग्वालियर में है।

(ग) पहले ग्वालियर में था अब मुंबई के वर्सोवा में है।

(घ) पहले ग्वालियर में था अब सिंध में है।

उत्तर: (ग) पहले ग्वालियर में था अब मुंबई के वर्सोवा में है।

3. कबूतरों से परेशान होकर लेखक की पत्नी ने क्या किया?

(क) लाइब्रेरी की मिर्जा और गालिब की किताबें अन्य जगह रख लीं।

(ख) कबूतरों ने जहाँ घर बनाया, वहाँ जाली लगा दी और उनके आने की खिड़की को बंद कर दिया।

(ग) उनको खिलाने-पिलाने की जिम्मेदारी लेखक को सौंप दी।

(घ) कबूतरों ने जहाँ घर बनाया, वहाँ सिर्फ जाली डाली और खिड़की बंद नहीं की।

उत्तर: (ख) कबूतरों ने जहाँ घर बनाया, वहाँ जाली लगा दी और उनके आने की खिड़की को बंद कर दिया।

4. 'मट्टी से मट्टी मिले, खो के सभी निशान' इस शायरी का जिक्र किस पशु/पंछी के संदर्भ में किया गया?

(क) कुत्ता (ख) कबूतर

(ग) च्योंटा (घ) मुर्गा

उत्तर: (क) कुत्ता

5. पशु-पक्षी सब की भाषा जानने वाले थे—

(क) लेखक निदा फाज़ली। (ख) नूह नामक पैगम्बर।

(ग) बाईबिल के सोलोमन। (घ) महाकवि शेख अयाज़।

उत्तर: (ग) बाईबिल के सोलोमन।

6. महाकवि शेख अयाज़ ने चीटिंयों के वाकिये का जिक्र—

(क) बाईबिल में पढ़ा।

(ख) कुरान में पढ़ा।

(ग) नूह नामक पैगम्बर से सुना।

(घ) आत्मकथा में लिखा।

उत्तर: (घ) आत्मकथा में लिखा।

7. लशकर जी किस बात से दुखी होकर मुद्दत तक रोते रहे—

(क) जख्मी घायल कुत्ते को उन्होंने दुत्कारा था।

(ख) अरब ने उनको नूह के लकब से याद किया।

(ग) उनका सब साथ छोड़ चुके थे।

(घ) जख्मी घायल कुत्ते का जवाब सुनकर पछतावे से दुखी होकर।

उत्तर: (घ) जख्मी घायल कुत्ते का जवाब सुनकर पछतावे से दुखी होकर।

8. लेखक की माँ ने खुदा से माफी किसलिए माँगी?

(क) क्योंकि—कबूतर के जोड़े का घोंसला उनके हाथों से बिखर गया था।

(ख) क्योंकि—बिल्ली ने उचककर दोनों में से एक अंडा तोड़ दिया था।

(ग) क्योंकि कबूतर के अंडे को बचाने की कोशिश में उनके हाथ से अंडा गिरकर टूट गया।

(घ) क्योंकि—दीया बत्ती के समय उनके हाथों से फूलों को तोड़ा गया, तो उनकी बदुआ से बचने के लिए।

उत्तर: (ग) क्योंकि कबूतर के अंडे को बचाने की कोशिश में उनके हाथ से अंडा गिरकर टूट गया।

9. शेख अयाज़ के पिताजी भोजन बीच में अधूरा छोड़ उठकर गए क्योंकि—

(क) भोजन करते समय रेंगते हुए एक काले च्योंटे को बेघर देख उसे उसके घर यानी कुएँ पर छोड़ने जाने के लिए।

(ख) उन्हें एक जरुरी बात अचानक से याद आयी थी।

(ग) उन्हें भोजन पसंद नहीं आया था।

(घ) भोजन करते समय किसी भूखे को देखकर उसे आधा भोजन देने के लिए।

उत्तर: (क) भोजन करते समय रेंगते हुए एक काले च्योंटे को बेघर देख उसे उसके घर यानी कुएँ पर छोड़ने जाने के लिए।

10. 'मैं सबके लिए मुहब्बत हूँ' ये किसने कहा है—

(क) लेखक निदा फाज़ली जी ने

(ख) ईसा. से 1025 वर्ष पूर्व के एक बादशाह ने जिसे सुलेमान कहा गया।

(ग) शेख अयाज़ जी ने

(घ) लश्कर नानक पैगंबर ने

उत्तर: (ख) ईसा. से 1025 वर्ष पूर्व के एक बादशाह ने जिसे सुलेमान कहा गया।